भारत 2023 INDIA

भोजवाणी

विभागीय राजभाषा पत्रिका

प्रवेशांक , वर्ष 2022–23

सत्यमेव जयते

उपक्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

पंचदीप भवन, न्यु सुभाष नगर, भोपाल 462023 (म.प्र)

एन एफ एल
NFL
areness Program
E. S. I. C.
by
Sh. K. C. J
Jt. Director ESI
Bhopal

भोजवाणी

विभागीय राजभाषा पत्रिका, प्रवेशांक

संरक्षक
श्री के. सी. झा
उप निदेशक (प्रभारी)

संपादक

श्री राजेन्द्र टुडू

उप निदेशक (रा.भा.प्र.)

संपादन सहयोग

श्री दीपक भटनागर
निजी सहायक

प्रकाशक

उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, न्यु सुभाष नगर,
केपिटल पेट्रोल पंप के सामने
रायसेन रोड, भोपाल–462023
ई. मेलः dir-srobhopal@esic.nic.in दूरभाष : 0755–2759043
केवल विभागीय प्रचालन हेतु –

पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं इसमें संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	महानिदेशक का संदेश	1
2	वित्त आयुक्त का संदेश	2
3	बीमा आयुक्त (राजभाषा) का संदेश	3
4	संरक्षक की कलम से	4
5	संपादक की कलम से	5
6	भोपाल का इतिहास	6
7	सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता	7
8	बच्चों की छिनता बचपन	8
9	राजा भोजः व्यक्तित्व एवं कर्तव्य	9
10	सनातन भौतिक शास्त्र एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान	10—11
11	चित्रकूट धाम	12—13
12	धाम ओरछा	14—15
13	शिमला की यात्रा	16
14	अमरकंटकः माँ नर्मदा का उद्‌गम	17—18
15	भारत में महिला सशक्तिकरण से संबंधित कानून	19—20
16	आधुनिक भारत के निर्माण में डॉ. अंबेडकर का योगदान	21
17	झुक नहीं सकते	22
18	श्रम का महत्व	23
19	यात्रा वृतांत {वन का उपहार (कोडईकनाल)}	24
20	होशंगाबाद के शैल चित्र	25
21	श्री गणेशः क्यों प्रथम पूज्यनीय हैं ?	26
22	लड़का लड़की एक समान ?	27
23	भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं मातृभाषा	28
24	नोवल कोरोना वायरस	29—30
25	बख्शीश	31
26	अंतर्राष्ट्रीय खेलों में पदक की आस एवं भारत की खेल संस्कृति	32
27	काश! सफर आसान होता!	33
28	हे प्रकृति! हम शर्मिंदा हैं।	34
29	नारी जीवन।	35
	सफर में धूप तो होगी ही।	35
30	बेटी	36
	अजन्मा	36
31	करें खुद पर विश्वास	37
32	बेटियाँ	38
	संघर्ष	38
33	बिटिया	39
	धरती के अनमोल रतन	39
34	इस बरस	40
	प्रकृति का वरदान	40
35	गाथा बीमा शाखा की	41
	अफसाना जमाने का	41
36	जहां खामोश रहना है वहां मुँह खोल जाते हैं।	42
	एसिक का गौरव।	42
37	यही संकट रहा तो	43
	बेटियाँ	43
38	जिंदगी	44
	हे ईश्वर मैं थक चुका हूँ।	44
39	जिंदगी	45
	बचपन	45
40	स्मृति शेष	46
	पृथ्वी बचाओ	46
41	कुछ झलकियाँ।	47—53

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, **Govt. of India**)
क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

डॉ. राजेन्द्र कुमार
महानिदेशक

संख्याः ए-49/17/1/2016-रा. भा.
दिनांकः 26.12.2022

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रशंसा हो रही है कि उपक्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल अपनी नवीन गृह-पत्रिका **"भोजवाणी"** के प्रथम अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। हिंदी हमारी राजभाषा है और यह हमारी एकता और अखण्डता का प्रतीक है। हमारे अधिकांश हितग्राहियों द्वारा बोली एवं समझी जाने वाली हिंदी भाषा को हमें और अधिक बढ़ावा देना न केवल हमारा दायित्व है बल्कि देशवासियों को आपस में जोडने का एक सशक्त माध्यम भी है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में एक प्रभावी और सशक्त माध्यम बनेगी।

इन्हीं शुभकामनाओं सहित।

राजेन्द्र कुमार
(डॉ. राजेन्द्र कुमार)

36
15/02/23

श्री के.सी. झा
उप-निदेशक (प्रभारी)
उप-क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम,
पंचदीप भवन, न्यु सुभाष नगर,
भोपाल-462023 (म.प्र.)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

टी.एल. यादेन
वित्त आयुक्त

संख्याः ए-49/17/02/2016-रा. भा.

दिनांकः 23.12.2022

संदेश

उप क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल की हिंदी गृह-पत्रिका **"भोजवाणी"** के प्रथम अंक के प्रकाशन के लिए बधाई। निगम इकाइयों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह-पत्रिकाएं हर एक इकाई की प्रगति और विकास की जानकारी देती हैं। पत्रिका के कुछ पृष्ठों से ही हमें कार्यालय के वर्ष भर की गतिविधियों की झलक मिल जाती है जो उस कार्यालय की उपलब्धियों को प्रसारित करने का सरल माध्यम बन जाती है। पत्रिका का प्रकाशन कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रति उनके प्रेम को भी प्रकट करता है। आशा है, उपक्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल की गृह-पत्रिका का यह अंक अपने इस उद्देश्य में सफल सिद्ध होगा।

पत्रिका के संपादक मण्डल सहित सभी रचनाकारों को शुभकामनाएं।

टी. एल. यादेन

(टी.एल. यादेन)

श्री के.सी. झा
उप-निदेशक (प्रभारी)
उप-क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम,
पंचदीप भवन, न्यु सुभाष नगर,
भोपाल-462023 (म.प्र.)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)
क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

दीपक जोशी
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

संख्याः ए-49/17/03/2016-रा. भा.
दिनांकः 07-02-2023

संदेश

यह जानकर हर्ष हुआ कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल अपनी गृह पत्रिका **"भोजवाणी"** के आगामी अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय के कार्मिकों को अपनी मातृभाषा के प्रति लगाव व भाषा संबंधी प्रतिभा को प्रकट करने का सशक्त मंच प्राप्त होता है। कार्यालय द्वारा गृह पत्रिका का प्रकाशन करना न केवल भारत सरकार द्वारा सतत् चलाए जा रहे राजभाषा के प्रचार प्रसार और उसे बढ़ावा देने के प्रति हमारे कर्तव्य को प्रकट करता है वरन् रचनाकारों को अपने विचारों को शब्दों में पिरोकर कागज पर उकेरने हेतु प्रेरित भी करता है।

"भोजवाणी" के निरंतर प्रकाशन की कामना करते हुए पत्रिका के संपादक मंडल को बधाई देता हूँ। पत्रिका के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

37
15/02/23

(दीपक जोशी)

श्री के.सी. झा
उप-निदेशक (प्रभारी)
उप-क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी.निगम,
पंचदीप भवन, न्यु सुभाष नगर,
भोपाल-462023 (म.प्र.)

संरक्षक की कलम से

आप सभी के समक्ष उपक्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल की नवीन गृहपत्रिका ''भोजवाणी ''के प्रथम अंक का प्रकाशन करते हुए मैं अत्यंत ही हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। हमारा देश विविधताओं वाला देश है, जहां अनेक भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं। किंतु उन सभी भाषाओं एवं बोलियों में हिंदी ही एकमात्र वैज्ञानिक भाषा है जो जिस उच्चारण में बोली जाती है ठीक उसी प्रकार लिखी जाती है तथा देश में सर्वाधिक बोली एवं समझी जाती है। देश की आजादी में एकता की सूत्राधार संवाद के माध्यम से हिंदी भाषा ही थी। राष्ट्रीय एकता की प्रतीक इस भाषा के महत्व तथा लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए आजादी के बाद हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संविधान में राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। आज विश्व भर के विकसित देशों की विकास गाथाएं हमारे समक्ष सार्थक विकास के प्रतिमान के रूप में मौजूद हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि कोई भी राष्ट्र अपनी भाषा को राजभाषा के रूप में प्रयोग कर विकास कर सकता है। हम भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग करके विकास के लक्ष्यों को तेजी से प्राप्त कर सकते हैं। आज सूचना तकनीक के माध्यम से भी हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण तैयार हो रहा है। अपना सरकारी काम–काज राजभाषा हिंदी में करना हमारा संवैधानिक दायित्व भी है। हमें अपने कामकाज में कठिन शब्दों का प्रयोग न करके सरल और सहज हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। इसकी खूबी है, कि अंग्रेजी भाषा के शब्दों को भी हिंदी में उच्चारण अनुरूप लिख सकते हैं।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है, कि क.रा.बी. निगम, उपक्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल की नवीन गृहपत्रिका ''भोजवाणी'' का प्रथम अंक राजभाषा कार्यान्वयन में मील का पत्थर साबित होगी और आप सभी की अपेक्षाओं पर अवश्य ही खरी उतरेगी। कार्यालय के अधिकारियों तथा कार्मिकों में राजभाषा के प्रति समर्पण की यह भावना ही कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन को सर्वोच्च शिखर पर ले जा रही है।

मैं उन समस्त प्रबुद्ध लेखकों/रचनाकारों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने रोचक एवं महत्वपूर्ण लेख भेजकर इसके प्रकाशन में अपना सहयोग दिया है। संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

(के.सी. झा)

उपनिदेशक (प्रभारी)

संपादक की कलम से

सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में हमारी योजना देश की सबसे बड़ी योजना है। योजना की व्याप्ति में समाज का श्रमिक वर्ग आता है। यह वर्ग प्रायः अपनी–अपनी मातृ भाषाओं या फिर देश की संपर्क भाषा, राजभाषा हिंदी में ही अपना जीवन, व्यापार चलाता है। ऐसे में बहुत जरूरी हो जाता है कि हम अपने बीमाकृत व्यक्ति से या तो उसकी मातृ भाषा में या फिर देश की संपर्क भाषा हिंदी में संवाद करें। 4 सितंबर, 1950 को जब हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया था, तब से सामाजिक स्थिति में बदलाव आया है। आज देश के सभी प्रांतों में हिंदी को समझने वाले लोग मौजूद हैं। तकनीकी क्रांति के चलते अब विचार का संप्रेषण द्रुतगामी और सहज हुआ है। इलेक्ट्रॉनिक विज्ञापनों ने देश दुनिया तक अपनी पहुँच बढ़ाई है। हमारी योजना के विज्ञापन हिंदी माध्यम से रेडियो, दूरदर्शन, स्थानीय चैनलों, समाचार पत्रों के माध्यम से पहुँचाए गए हैं और इन्हें जनता ने सहजता से समझा है और अपनी प्रतिक्रिया दी है। मेरा अनुभव कहता है कि न केवल हिंदी प्रांतों में बल्कि अहिंदी प्रांतों में भी राजभाषा हिंदी की स्थिति मजबूत हुई है। पूरी दुनिया की भाषाएँ एक दूसरे के समीप आ रही हैं। सभी संस्कृतियाँ एक दूसरे के पास पहुँच रही हैं। हम एक वैश्विक गाँव अनुरूप जीवन जी रहे हैं। अब यह संभव नहीं बचा कि हम केवल परिशोधित और परिनिष्ठ भाषा का ही प्रयोग करें। मेरी समझ में अब भाषा के लिए व्यावहारिक रास्ता यही है कि हम आमजन की समझ में आने वाली भाषा चुनें और उसे उसकी व्याकरण संबंधी नीतियों के अनुसार लिखें। निगम की सेवा में आ रही नई पीढ़ी प्रायः हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में बराबर दखल रखती है। मध्यप्रदेश क्षेत्र में मेरा अनुभव यह है कि यहां प्रायः संपूर्ण काम–काज हिंदी में ही होता है। यह क्षेत्र हिंदी के प्रयोग की दृष्टि से बहुत अलग है। आवश्यकता है कि आंचलिक शब्दों के प्रयोग के बजाए सरकार द्वारा निर्धारित शब्दों का ही प्रयोग किया जाए इससे संप्रेषणीयता में वृद्धि होगी। हिंदी में काम करना केवल सरकारी तौर पर ही जरूरी नहीं है बल्कि यह हमारा दायित्व भी है। इस बदलते हुए विश्व में हम अपनी भाषाओं के द्वारा ही अपनी सांस्कृतिक धरोहर को विश्व धरोहर के रूप में संरक्षित कर सकते हैं। हमें यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि भाषा और संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरा जीवित नहीं रह सकता।

उपक्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल की पत्रिका ''भोजवाणी '' का प्रथम संस्करण आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत है। उम्मीद है पत्रिका आप लोगों को पसंद आएगी। पत्रिका ''भोजवाणी'' के इस संस्करण के लिए जिन साथियों का सहयोग मिला है उन सबको बधाई ।

(राजेन्द्र टुडू)
उपनिदेशक (रा.भा.प्र.)

भोपाल का इतिहास

भोपाल भारत देश के मध्य प्रदेश राज्य की राजधानी है। इसे झीलों की नगरी के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि यहां छोटी–बड़ी लगभग 45 झीलें है। इसकी स्थापना परमार राजा भोज द्वारा 1000–1055 ईसवी में की गई थी। इन्हीं राजा भोज के नाम पर इस शहर का पूर्व नाम भोजपाल हुआ करते थे बाद में विकृत होकर भोपाल नाम हुआ। मध्यकालीन इतिहास में इस शहर में भोपाल वंश की स्थापना अफगान सिपाही दोस्त–मोहम्मद खान ने की थी। उन्होंने भोपाल पर 1708–1740 तक शासन किया। दोस्त मोहम्मद खान द्वारा ही इस्लामी सभ्यता को भोपाल में विस्तार किया गया। इन्हीं के काल से भोपाल को नवाबों के शहर के नाम से जाना जाने लगा। आजादी से पहले भोपाल हैदराबाद के बाद सबसे बड़ा मुस्लिम बाहुल्य शहर था।

भोपाल रियासत की गद्दी पर महिलाओं का भी बहुत बोलबाला रहा। सन 1849–1926 के बीच चार बेगमों द्वारा भोपाल की बागडोर संभाली गई। कुदसिया बेगम सबसे पहली महिला शासिका बनी, इन्हें गोहर बेगम के नाम से भी जाना जाता था। इन्हीं ने भोपाल में स्थित गोहर महल एवं जामा मस्जिद का निर्माण करवाया। इनकी एक ही संतान थी, जिनका नाम सिकंदरजहां था। सिकंदरजहां बेगम ही भोपाल रियासत की दूसरी महिला शासिका बनीं इन्हीं के द्वारा प्रसिद्ध मोती मस्जिद का निर्माण करवाया गया। सिकंदर–जहां बेगम की पुत्री शाहजहां बेगम का भी बहुत बोलबाला रहा, इनका कार्यकाल सभी महिला शासिकाओं में सबसे लंबा रहा। शाहजहां बेगम द्वारा ही भारत की सबसे बड़ी मस्जिद ताज–उल मस्जिद का निर्माण करवाया गया। भोपाल रियासत की अंतिम शासिका कखोरो जहां बेगम बनी।

15 अगस्त 1947 को जब भारत देश आजाद हुआ, उस समय भोपाल के नवाब हमीदुल्ला खान थे। उन्होंने भोपाल को स्वतंत्र रखने का निर्णय लिया परंतु जनता जनार्दन के दबाव में आकर एवं सरदार पटेल के हस्तक्षेप के उपरांत्र भोपाल राज्य को 4 जून 1949 को भारत में सम्मिलित किया गया। आजाद भारत के भोपाल का पहला तिरंगा डाकघर पर लहराया गया। इसके उपरांत सन 1956 में भोपाल को मध्य प्रदेश की राजधानी घोषित किया गया जो कि उस समय सीहोर जिले के अंतर्गत था तदुपरांत दिनांक 02.10.1972 से भोपाल को जिले का दर्जा दिया गया जो आज तक कायम है।

इस प्रकार मालवा के पठार एवं विंध्यांचल पर्वत की तलहटी में बसे भोपाल का इतिहास मुख्य रूप से मध्यकाल से प्रारंभ होता है एवं अनेक सियासी उथल–पुथल के पश्चात भोपाल आधुनिक काल में प्रवेश करता है जहां आज अनेक बांध, तालाब, अभ्यारण, राष्ट्रीय उद्यान आदि प्राकृतिक स्थल होने के कारण मौलाना आजाद राष्ट्रीय तकनीकी संस्थान, भारतीय विज्ञान संस्थान एवं अनुसंधान संस्थान, विज्ञान केंद्र इत्यादि जैसे बड़े–बड़े संस्थान भी स्थित है।

(मयंक अग्रवाल)
कार्यालय अधीक्षक,

सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता

भारतीय संस्कृति में पारिवारिक रिश्ते और परम्पराओं को संजोय रखने का अपना अलग महत्व रहा है। पारिवारिक रिश्ते मजबूती के साथ एक सूत्र में बंधे होते थे। आपसी सहयोग से एक दूसरे की आवश्यकतों की पूर्ति होती थी। यह सब संयुक्त परिवार की संस्कृति में देखने मिलता था। यही सामाजिक सुरक्षा की अवधारणा को प्रतिपादित करता है। धीरे–धीरे परिवारों के बिखरने तथा रोजगार की आवश्यकता के कारण लोगों का परिवार छोडकर जाने से संयुक्त परिवार एकल परिवार में परिवर्तित होने लगे। एकल परिवार किसी आकस्मिक आपदा के लिए अपेक्षाकृत ज्यादा तैयार नही होते हैं। इसलिए इन परिवारों में सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता अधिक होती है।

प्राचीन समय में रिश्ते आपसी समझ, आदर और अनुशासन की डोर से मजबूती से बंधे हुए थे। विकट परिस्थिति उत्पन्न होने पर परिवार के सदस्य मिलजुलकर सामना करते हुए उससे निपट लेते थे। इन सबके कारण परिवार समृद्द होते गए और किसी बाहरी सहायता के बिना जीवन के स्तर को बनाए रखा। अनेक धर्म और समाजों में यह बंधुत्व की भावना आज भी देखने मिलती है। स्वजातीय परिवारों की सामाजिक सुरक्षा के लिए अनेक कार्यकम चलाये गये। परंतु समाज के आखिरी छोड पर खडे व्यक्ति को लाभ नहीं मिल सका।

समय के गुजरने के साथ परिवारों में बिखराव देखने मिला। इसके अनेक कारण थे जिसमें रोजगार की तलाश में निकलने के कारण युवा अपने पैत्रिक घर से दूर हो गए। बार बार घर न जा पाने के कारण अनेक लोग कार्यस्थल में ही बस गये। परिवार के निमार्ण में समय के साथ बदलाव हुआ है जिससे परिवार की परिभाषा बदल गयी है। एकल अभिभावक या माता पिता दोंनों के कार्य पर रहने के कारण जोखिम उत्पन्न हुए हैं। अपनी आकस्मिक आवश्यकतों के लिए बचत करना प्रारंभ कर दिया गया परंतु सभी आवश्यकताओं को व्यक्ति द्वारा स्वयं पूरा नहीं किया जा सकता। वर्तमान समय में बच्चों के शिक्षण एवं पालन पोषण के लिए, परिवार की चिकित्सा एवं अन्य जोखिमों के लिए सामाजिक सुरक्षा सहायता बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है।

सामाजिक सुरक्षा कार्यकमों का उद्देश्य, माता पिता द्वारा निभाई गयी जिम्मेदारी, परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य की रक्षा एवं मां–बाप या जीवन साथी के जीवन की सुरक्षा एवं बच्चों के भरण पोषण है। इसके लिए लाभार्थियों का चयन किया जाता है जिसमें उनके आय की सीमा तथा अन्य मापदण्ड तैयार किये जाते हैं। कुछ वर्षों में सामाजिक सुरक्षा देने का दायरा काफी विस्तृत हुआ है फिर भी दुनिया की लगभग 40 प्रतिशत आबादी को किसी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा हासिल नहीं है। संगठित क्षेत्रों में ही कई ऐसे क्षेत्र में जहां कार्यबल को रोजगार की निरंतरता न होने के कारण पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा हासिल नहीं है। जबकि अधिकतर सामाजिक सुरक्षा योजनाएं इस सिद्वांत पर आधारित हैं कि कामगार पूर्णकालिक नौकरी पर कार्यरत है। इस धारणा के कारण अमानक तरीकों से कार्य में लगे कामगारों को सामाजिक सुरक्षा का कवच प्राप्त नहीं हो पाता है। सामाजिक सुरक्षा देने में नियोक्ता की महत्वपूर्ण भूमिका प्रदर्शित होती है।

वर्तमान महामारी के समय में श्रमिकों एवं कार्ययल का पलायन एक बहुत बडी परेशानी बनकर उभरा। इस प्रकार के बदलते समय में अब सामाजिक सुरक्षा कार्यकमों एवं हितलाभों को एक राष्ट्रीय कार्यकम के तहत आयोजित किया जाना चाहिए जिसमें राज्य एवं केन्द्र सरकारों का आपसी तालमेल हो। डिजिटल टेक्नालाजी की मदद से लोगों को जोडकर अव्याप्त लोगों आवश्यक सामाजिक सुरक्षा किफायती दर पर प्रदान की जा सकती है। सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने की दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति हुई है परंतु विभिन्न अधिनियमों में आपसी तालमेल की कमी से कहीं कहीं जटिलता भी देखने को मिली है। संगठित क्षेत्रों के अलावा असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत श्रम बल को भी सामाजिक सुरक्षा का लाभ देने के प्रयास किए जाने चाहिए। असंगठित क्षेत्रों के कार्यबल को ध्यान में रखते हुए भविष्य के सामाजिक सुरक्षा हितलाभों का निर्माण किया जाना चाहिए, जिससे सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों का विस्तार सम्पूर्ण क्षेत्रों में हो सके।

(योगेन्द्र सिंह सिमोनिया)
सहायक निदेशक
जबलपुर

बच्चों का छिनता बचपन

हमारे समाज में हर दूसरा व्यक्ति घर परिवार के सदस्यों के साथ, दफ्तरों में अपने सहकर्मियों के साथ, अक्सर यह कहता हुआ दिखाई देता है, कि हमारे बच्चे अपने बचपन को वैसे नहीं जी पा रहे हैं जैसे हमने जिया है। साथ ही अपने बचपन में खेले गई खेलों को याद करते हुए उनका वर्णन करते हुए एक अजीब सी खुशी का अनुभव भी करता है। वो यादें पुरानी होकर भी कुछ वक्त के लिए उन्हें सारी परेशानियों से दूर कर देती है।

परंतु मुझे यह महसूस होता है कि धीरे धीरे अब ये बस चर्चा का विषय हो गया है। जिसे हम चाय के आखिरी घूंट के साथ खत्म कर देते हैं।

पर साथ ही मुझे यह लगता है कि अब यह विषय सिर्फ चर्चा का न होकर सामाजिक स्तर पर सुधार का होना चाहिए, क्योंकि हम प्रतिदिन टी.बी., न्यूज़ चैनल्स व विभिन्न अन्य माध्यमों के द्वारा महसूस करते हैं कि ऐसी बहुत ही गतिविधियां उपकरण हैं जो हमें भौतिक विकास प्रदान कर रहे हैं, परंतु हमारे बच्चों की मानसिक अवस्था के साथ यह खिलवाड़ है। निश्चय ही यह हमारे बच्चों का वर्तमान तो बिगाड़ ही रहा है, परंतु उनका भविष्य भी अंधकार में जा रहा है। आज मैं कई कारणों में से एक कारण यह भी पाता हूँ कि हमारे बच्चों द्वारा स्मार्टफोन का प्रयोग बहुतायत मात्रा में किया जाने लगा है जो उनके मस्तिष्क पटल को बर्बाद कर रहा है। सामान्यतः बच्चों में चिड़चिड़ाप, गुस्सा नींद की कमी, सामूहिक भावना का अभाव अब आम बात हो गई है। समय से पूर्व आंखों में रोशनी की कमी व अन्य बहुत से लक्षण हैं जिसके लिए स्मार्टफोन व अन्य गैजेट्स जिम्मेदार हैं। साथ ही अन्य आपराधिक गतिविधियां भी इन गैजेट्स के साथ व माध्याअभाव से घटित होती हैं। हमारे समाज में कई वर्गों के लोग रहते हैं जिनकी आर्थिक स्थितियां भिन्न भिन्न हैं पर बचपन हर वर्ग में एक समान ही होता है। उसकी इच्छाएं, खुशियां एक सी होती हैं। पर वह अन्य की तुलना स्वयं को कम पाता है तो बहुधा यह देखा गया है कि वह आपराधिक रास्तों पर सहज ही पहुंच जाता हैं। इन गैजेट्स में ज्ञान के साथ ही परिपक्वता भी कई बार समय पूर्व ही चित्रित हो जाती है। यह न सिर्फ हमारे लिए बल्कि हमारे बच्चों के साथ हमारे समाज के लिए भी घातक है। हम बच्चों को इनसे पूर्णतः दूर नहीं कर सकते परंतु हमें बच्चों द्वारा इनके प्रयोग को निश्चय ही कम करना चाहिए। इन गैजेट्स के अत्यधिक दबाव ने हमारे बच्चों को अपग कर दिया है, उनका वह दौर उनसे छीन लिया है या यूँ कहें छिन गया है जो जिंदगी का सबसे यादगार पन्ना होता है।

हमें अब जरूरत है कि हम सिर्फ चर्चा न करके अपने बच्चों को समय भी दें क्योंकि हमारा दिया गया समय ही हमारे बच्चों और उनके भविष्य को संवार सकता है और हमारे बच्चों को उनका बचपन लौटा सकता है। इसी संदर्भ में मैं अपनी बात कुछ पंक्तियों के साथ व्यक्त कर रहा हूँ :–

बचपन

कभी पतंग सा उड़ता बचपन,
कभी तैरती नाव सा.।
कभी रूठता कभी मनाता,
हल्की धूप, छांव सा ।
अनमोल खजाना जीवन का ये,
तुम यूं ही न मिटने दो
लौटा दो तुम कोशिश करके,
बचपन अपने बच्चों का ।
उनकी जीवन की खुशियों को
न यूं ही तुम घटने दो।
वो नादान हैं, वो नहीं समझते
वो जीवन में क्या खोएंगे ।
पर तुम अपनी कोशिश से
न उनका बचपन खोने दो।

(दीपक भटनागर)
निजी सहायक

राजा भोजः व्यक्तित्व एवं कर्तत्व

11वीं सदी के मध्यकालीन भारत के इतिहास में जब उत्तर में पाल एवं गंग, पश्चिम में चौहान एवं सोलंकी तथा दक्षिण में चोल एवं चालुक्य वंश के शासकों का राज था एवं मोहम्मद गजनी जैसे आक्रमणकारी उत्तर–पश्चिम से लगातार भारत पर हमला कर रहे थे ऐसे समय में परमार वंश के मालवा क्षेत्र की धारानगरी (वर्तमान धार) में सदी के सबसे महान शासक राजा भोज का जन्म हुआ। कला, साहित्य एवं संस्कृति के विकास के साथ साथ विद्वानों को राजकीय संरक्षण देने के प्रयासों के चलते भोजकालीन समय की तुलना पुरानी रोमन सभ्यता एवं इटली के पुनर्जागरण काल से करें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। महान इतिहासकार हेनरी इलियट ने राजा भोज को कलम एवं तलवार दोनों में दक्ष बताया है। हालांकि राजा भोज का झुकाव सैन्य अभियानों की तुलना में साहित्य एवं कला की तरफ अधिक था।

राजा भोज ने राजनैतिक–सामाजिक आर्थिक–सांस्कृतिक क्षेत्र में अनेक कार्य किए जो उन्हें समेकित दृष्टि से सिर्फ परमार वंश का ही नहीं अपितु समग्र भारत का सबसे महान शासक बनाते हैं।

राजनैतिक क्षेत्र में, राजा भोज के सबसे बड़े प्रतिद्वंदी चालुक्य, चंदेल एवं कलचुरी राजा थे। जिन पर कई बार उन्होंने विजय प्राप्त की एवं अपना साम्राज्य उत्तर में चित्तौड़ से दक्षिण में कोंकण तक एवं पूर्व में विदिशा से पश्चिम में साबरमती नदी तक विस्तार करने एवं सुरक्षित रखने में सफलता हासिल की हालांकि उदयपुर प्रशस्ति में उनका साम्राज्य का कैलाश से मलयगिरी तक फैले होने का उल्लेख है परंतु इसके अन्य ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध न होने के कारण इतिहासकार एकमत नहीं है।

आर्थिक–सामाजिक दृष्टि से देखें तो राजा भोज ने अनेक कल्याणकारी कार्य किये है जिसमे प्रमुखतः भोजपुर नामक नगर की स्थापना, जिसमें प्रमुखत भोजपुर, चित्तौड़गढ़, धार आदि नगरों में अनेक मंदिरों की स्थापना अनेक विशाल तालाबों का निर्माण, सिंचाई की उत्तम व्यवस्था करना, धार में सरस्वती मंदिर की स्थापना इत्यादि अभूतपूर्व कार्य राजा भोज के द्वारा किए गए। भोजपुर का शिवमंदिर जिसे उत्तर भारत का सोमनाथ भी कहा जाता है, का निर्माण भी राजा भोज द्वारा ही कराया गया था। मध्य प्रदेश की एक मात्र रामसर आद्रभूमि भोजताल (बड़ा तालाब भोपाल) का निर्माण भी राजा भोज द्वारा द्वारा ही कराया गया है बल्लाल सैन द्वारा रचित भोजप्रबन्ध जो राज्य भोज द्वारा विद्वानों और कवियों के सम्मान एवं उन्हें पुरस्कार स्वरूप दिये गये दान की कथाओं से भरा पड़ा है। इससे स्पष्ट होता है कि वह एक लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना के पक्षधर थे।

सांस्कृतिक दृष्टि से, राजा भोज ने 500 से अधिक विद्वानों के संरक्षण के लिए भोजशाला का निर्माण तो किया ही साथ ही स्वयं भी व्याकरण, चिकित्सा विज्ञान, दंडनीति, खगोल एवं ज्योतिष, शिल्प आदि विषयों पर सरस्वतीकथाभरण, तत्वप्रकाश समरांगण सूत्र आदि जैसे 84 ग्रंथ लिख कर सबसे विद्वान राजा के रूप में प्रसिद्ध होए राजा भोज के द्वारा बनाए गए मंदिर मुख्यतः नागर शैली में बनाए गए जो भारतीय शिल्पकला के अद्भुत उदाहरण हैं।

विल्हण ने अपने विक्रमाडुदेवचरित् में लिखा है कि अन्य नरेशों की तुलना, राजा भोज से नहीं की जा सकती। इसके अलावा उस समय राजा भोज का यश इतना फैला हुआ था, कि अन्य प्रान्तों के विद्वान् अपने यहाँ के नरेशों की विद्वत्ता और दान–शीलता दिखलाने के लिये राजा भोज से ही उनकी तुलना किया करते थे। निष्कर्षतः यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि 11वीं सदी के राजा भोज अपनी सोच उदारता एवं विद्वत्ता के मामले मे अपने समय से कोसों आगे थे।

(पुलकित जैन)
उप क्षेत्रीय कार्यालय
भोपाल

सनातन भौतिक शास्त्र एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान

सनातन भौतिक शास्त्र पूण विकसित एंव प्रभावशाली विज्ञान था, जिसे सहजता से साधकों (तत्कालीन विज्ञानियों) ने उसे सामाजिक रीति, व्यवस्था एवं धर्म में सम्मिलित कर उपयोगकर्ता को स्वाभाविक उपलब्धता प्रदाता बनाया था। धर्म से समाहित करने के कारण उसकी सार्थकता पर आमजन टीका–टिप्पणी नहीं करते थे। जबकि आधुनिक भौतिक विज्ञान एक विशेष स्तर तक ही उपयोगकारी है, तुलनात्मक रूप से अभी शैशव अवस्था में है।

ऋषि मुनियों ने (अज्ञात भारतीयों), जिनको वर्तमान परिवेश में हमें "वैज्ञानिक" कहा जाना चाहिए, सौर परिवार की गणना बाँस की पुंगलियों से कर ली थी। उनका विचरण एंव स्थितियों परिस्थितियों, को सहजता से प्राप्त कर लिया था। आधुनिक विज्ञानी केपलर ने 16 वी सदी में परकलित किया, जो कि आज कैपलर नियमों से जाना जाता है। अज्ञात भारतीय ऋषि मुनियों द्वारा पृथ्वी को शेषनाग के शीर्ष पर गोलनुमा पिण्ड कहा गया है। सहजता के लिए शेषनाग का उल्लेख किया गया होगा, क्योंकि आम जनमानस को आधार बताना जरूरी था, अन्यथा वह इस तथ्य को काल्पनिक मानता और विश्वास नहीं करता। कालान्तर में 236 ई.पू. में इराटोस्थनीज ने भी पृथ्वी का आकार गोलाकार बताया है और प्रयोग द्वारा सिद्ध भी किया है।

ज्योतिषशास्त्र पूर्ण वैज्ञानिक रूप से गणितीय प्रणाली थी जो सनातन में पूर्ण विकसित थी, आज पुनः विलोपन के कारण प्रौढ़ से ह्रास के फलस्वरूप पुनः शैशव अवस्था में पहुँच गयी है। ज्योतिष भी सौरमण्डल के सभी गृहों पर मनुष्य एंव सभी प्राणियों के जन्म समय पर रिजल्टेंट गुरूत्वीय प्रभाव को भविष्य के रूप में परिकलित करता है। जिस ग्रह "का, प्रभाव प्रभावी होता है उस गृह की प्रकृति के अनुरूप प्राणी का व्यवहार, कद–काठी, सफलता–असफलता, रंग–रूप, रोग, वैवाहिक जीवन, भाग्य, सोच–विचार, बुद्धिमतता, मूर्खता, पराक्रम धन, आय–व्यय, मृत्यु एंव भाग्य का निर्धारण होता है। चन्द्रमा एंव पृथ्वी के गुरूत्व प्रभाव के कारण समुद्र में ज्वार–भाटा आता है, जिससे पानी का स्तर कई फीट उपर या नीचे हो जाता है। मनुष्य के मस्तिष्क में जल तत्व ही बहुतायत में है प्रभाव तो निश्चित होगा। इस प्रकार ज्योतिष पूर्ण विकसित भौतिक विज्ञान एवं स्प्रीचुअल विज्ञान ही है। वर्तमान वैज्ञानिक अवधारणाओं एवं विधियों तथा निष्कर्षित आकड़ों से आज पाया गया है कि. आई–क्यू. ई–क्यू. ए–क्यू की तुलना में स्प्रिचुअल कुशेन्ट सफलता का वर्तमान पैमाना है। सनातन में पेड़–पौधे, पशु–पक्षिओं को देवत्व का स्थान प्राप्त था, तथा उनकी हत्या पाप थी एंव गौ हत्या तो महापाप थी, आज भी वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित है कि प्रकृति के संतुलन एंव भोजन श्रंखला में इनकी भागीदारी अनिवार्य है, जिसमें दुग्ध उत्पादक गाय का अनिवार्यता महत्त्तम है।

भगवान राम द्वारा उपयोगित "पुष्पक विमान" की परिकल्पना, जिसमें इच्छानुसार गतिमान होना, गाइडिड मिसाइल तकनीकी ही थी, जो सतयुग में मस्तिष्करूपी कम्प्यूटर से ही स्वसंचालित होता था तथा संवेग संरक्षण के सिध्दांत के बजाय अनन्त उर्जा स्त्रोत सूर्य से प्राप्त करता था। रामायण एवं महाभारत काल के युद्धों में विशाल सेना संहार तीरों द्वारा लक्ष्य भेदन, छोडे गये तीरों द्वारा पृथ्वी परिकमा करना, आधुनिक गाइडिड मिसाइलों, अणुबमों और परमाणु बमों का प्रयोग ही तो था तथा तकनीकी नाभकीय विखण्डन तथा संलयन ही थी। कणादि मुनि ने लाखों वर्ष पूर्व परमाणु अवधारणा को बताया था जो बाद में इस परमाणु ईकाई की खोज रदरफोर्ड ने की। कागभषुण्ड का राजा रामचन्द्र द्वारा छोड़े गये तीर का पृथ्वी परिक्रमा कर वापस माफी के लिए प्रस्तुत होना जी.एस.एल.वी. राकेट तकनीकी ही तो थी, जो संवेग संरक्षण तकनीकी आधार पर कार्य करती है। जिस प्रकार नाभकीय विखण्डन एवं संलयन में द्रव्यमान क्षति के परिणामस्वरूप असीम उर्जा प्राप्त होती है तथा सूर्य की उर्जा जो नाभकीय संलयन से प्राप्त हो रही है वही तो सनातन में ओम (ॐ) है वही शिव और शक्ति है। आइंस्टाइन की रिलेटिबिटी थ्योरी के अनुसार समय में बढ़ोत्तरी, भौतिक परिमापन (लेन्थ) में संकुचन गतिमान पिण्डो की तीव्रतम अनुरूपीय प्रकाशीय गति के कारण सम्भव होता है। सनातन में जनमानस मे पीढ़ी दर पीढ़ी अवधारित एंव उल्लेखित होता आ रहा है, कि देवलोक, विष्णुलोक, स्वर्गलोक, सूर्यलोक, मृत्युलोक इत्यादि के समयों में कई लाख गुना अंतर होता था। अंत में यह उल्लेख करूंगा ऑइंस्टाईन रिलेटिविटी थ्योरी पर तो आम धार्मिक अनुयायी चर्चा किया करता था। पीपल की पूजा इसलिए की जाती थी, कि पीपल वृक्ष के पत्ते हवा प्रवाह में बाधक नहीं होते है। तुलसी का प्रयोग प्रसाद में अनिवार्य था ताकि मनुष्य एण्टीऑक्सिडेंट तत्व ग्रहण कर सकें। घर

में, आँगन में गोबर का लेपन किया जाता था ताकि रासायनिक किया उपरान्त जो मीथेन गैस गोबर से उत्पन्न होती है, उसके पैरो के संपर्क से आने वाले कीटाणु समाप्त हो सके। विज्ञान सहज आम नागरिकों के उपयोग हेतु धर्म संस्कारों में विद्यमान था।

धर्म संस्कारों में वर्णित है, जनेऊ को धारण कर तांबे के पात्र से सूर्य को आर्ग दिया जाता था। स्नानोपरान्त जनेऊ गीला होता है एवं तांबा अच्छा विद्युतचालक है तथा सहज उपलब्ध जल अच्छा विद्युत चालक होता है इन सभी को भौतिक विज्ञान से जोड़ते है, शरीर पर लिपटा जल से भीगा जनेऊ क्वाइल (लूप) का कार्य करता है। पृथ्वी जो स्वाभाविक बहुत उच्च क्षमता युक्त चुंबक है जल द्वारा सूर्य को अर्ग देना चुंबक के परपेन्डीकुलर चेन्ज–इन–फलक्स की घटना को घटित करता है, फ्लेमिंग के लेफ्ट हैंड थम्ब रूल के अनुरूप जनेऊ रूपी क्वाइल में इण्डक्शन विद्युतधारा प्रवाहित होगी जिसका फ्लो क्लॉकवाइज होगा इस स्थिति में उपरोक्त नियमानुसार एक फोर्स ड़ेवलप होता है। फोर्स की दिशा क्वाइल के केन्द्र (हृदय) की ओर होगी। यह जनित फोर्स हृदय को अतिरिक्त टॉर्क देता होगा। यह नियमित टार्क रक्त में कोलस्ट्रॉल को कम करने में, हृदय को कुछ अतिरिक्त जीवन देने में सक्षम हो सकता है। यह आगे रिसर्च का विषय है। प्रत्येक धार्मिक रीति–रिवाज कुछ न कुछ वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित होते ही है।

रोचक तथ्य उल्लेखित करता हूँ–पौराणिक रूढ़िवादिता है, कि पारस पत्थर (मरकरी) आस्तिव में हुआ करती थी, इसका उल्लेख संस्कृत भाषा में कई सौ वर्षों पुराने कागजों पर लिखित साक्ष्य के रूप में उपलब्ध है, जिसमें पारे से सोना बनाना उल्लेखित है। विधियों में उल्लेखित वस्तुएँ जिन्हें सामान्यतः वर्तमान परवेश में जानकारी नहीं है, और भाषा का अल्पबोध होने के कारण जैसा उल्लेखित है, रासायनिक किया सम्पादित नहीं कि जा सकती है। कुल मिलाकर यह कहना चाह रहा हूँ जनमानस ने पीढ़ियों से सुना है कि पारे से सोना बनता है। आज विज्ञान द्वारा वर्ष 1924 में प्रोफेसर मिथी और स्टामिरिच ने पारे पर न्युट्रॉन की बमबारी कर तथा वैज्ञानिक शेयर एवं के.टी. ब्रेनब्रिज ने सन 1941 में पारे पर प्रोटॉन की बमबारी, प्रोटॉन बमबारी से आशय प्रोटॉन को साइक्लोट्रान से त्वरित कर पारे के अणु से टकराते है तब पारा जिसका एटॉमिक नम्बर 80 है। सोने (एटामिक नंबर–79) में बदल जाता है, एवं हीलियम नाभिक की उत्पत्ति भी होती है। आधुनिक आवर्त सारणी में भी सोने के बाद पारा दर्शाया गया है। उपरोक्त भौतिक रासायनिक क्रिया इस प्रकार सम्पादित होती है।

$$_{80}Hg^{200} + {}_{1}H^{1} \rightarrow {}_{79}Au^{197} + {}_{2}He^{4}$$

लेकिन व्यवसायिक उपयोग मतलब 197 ग्राम सोना बनाने हेतु अवोगाद्रो नंबर यानि कि 6.023×10^{23}के अणुओं पर प्रोटॉन की बमबारी करनी होगी जो व्यवसायिक दृष्टि से वर्तमान सोने की दरों की तुलना में कई गुनी मंहगी होगी। आशय है विज्ञान भी आज पारस पत्थर के सिद्धांत के अस्तित्व को प्रमाणित कर रहा है। यह प्रथा तो लाखों वर्ष पूर्व ऋषि मुनि अपनी चिलम में पारा रख कर वातावरण से वायु सांस द्वारा खींचकर जिसमें प्रोटान एवं न्यूट्रान सहज उपलब्ध है सोना बनाकर उपहार में बाँटा करते थे। किदंवती ही सही पर प्रमाणिक विज्ञान की खोज तो अज्ञात भारतीय वैज्ञानिकों ने, जिन्हे हम सम्मान से साधु–संत कहते हैं, ने लाखों वर्ष पूर्व कर ली थी।

वर्तमान भौतिक विज्ञान में कुछ नया नहीं है। ऊपर उल्लेखित तथ्यों संभावनाओ, प्रमाणिक वैज्ञानिक आधारों, धार्मिक कार्यकलापों के आधार पर उल्लेखित करना चाहता हूँ, कि सनातन भौतिक विज्ञान वास्तविक रूप में पूर्ण विकसित विज्ञान था, जो विशेष वर्ग साधु–संतो, साधक, गुरूओं के पास उपलब्ध थी, और वे अपनी आने वाली पीढ़ियों को उनके स्तर के ज्ञानी शिष्य न मिलने के कारण पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानान्तरित नहीं कर पाये और साथ ही लिपिबद्ध एवं अरकाइव भी नहीं कर पाये और विज्ञान धीरे धीरे विलुप्तप्राय सी हो गई है। उपरोक्त के समर्थन में विषय से हटकर अतिरिक्त में यह कहना चाहूँगा कि महाकवि कालीदास, महर्षि वेदव्यास एवं महाकवि सूरदास (नेत्रहीन होने के बावजूद श्रंगार का अद्वितीय अद्भुत वर्णन) द्वारा लिखित ग्रथों की एकल रचना संदर्भो पर वर्तमान में शोधार्थी पी.एच.डी. कर रहे हैं, और दुबारा इस स्तर पर लिखना तो दूर सोचने के लिए इस सदी में कोई पात्र तक नहीं है। यही समोवेश इतिहास सनातन भौतिक शास्त्र से आधुनिक भौतिक विज्ञान का रहा है

(कालीचरन झा)
एम.एस.सी.(भौतिक विज्ञान)
उप निदेशक (प्रभारी)

चित्रकूट धाम

चित्रकूट भारत के उत्तर प्रदेश के चित्रकूट ज़िले एवं कुछ भाग मध्य प्रदेश राज्य के सतना ज़िले में स्थित, एक शहर है। यह बुन्देलखण्ड का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और पुरातात्विक महत्व रखता है। चित्रकूट भगवान राम की कर्म भूमि है। भगवान राम ने वनवास के 17 वर्ष चित्रकूट मे बिताये थे। चित्रकूट मंदिरों का शहर और धार्मिक स्थल है। चित्रकूट मंदाकिनी नदी के किनारे पर बसा भारत के सबसे प्राचीन तीर्थस्थलों में से भी एक है। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में 38.2 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला शांत और सुन्दर चित्रकूट, प्रकृति और ईश्वर की अनुपम देन है। चारों ओर से विंध्याचल पर्वत श्रृंखलाओं और वनों से घिरे चित्रकूट को अनेक आश्चर्यों की पहाड़ी कहा जाता है। मंदाकिनी नदी के किनारे बने अनेक घाट विशेष कर रामघाट और कामतानाथ मंदिर में पूरे साल श्रद्धालुओं का आना–जाना लगा रहता है। अमावस्या के दिन यहाँ विशेष महत्व माना जाता है माना जाता है कि भगवान राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ अपने वनवास के चौंदह वर्षो में ग्यारह वर्ष चित्रकूट में ही बिताए थे। इसी स्थान पर ऋषि अत्रि और सती अनसुइया ने ध्यान लगाया था। ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने चित्रकूट में ही सती अनसुइया के घर जन्म लिया था। यहाँ इसी जिले से सटा हुआ एक स्थान राजापुर है जहाँ कुछ लोग तुलसीदासजी का जन्म स्थान बताते हैं। यहीं रामचरितमानस की मूल प्रति भी रखी हुई है। इस पवित्र पर्वत का काफी धार्मिक महत्व है, भगवान राम ने कामद पर्वत राज को इष्ट मानकर रहने का संरक्षण मांगा था और 11 वर्ष यहीं निवास किया था।

श्रद्धालु कामदगिरी पर्वत की 5 किलोमीटर की परिक्रमा कर अपनी मनोकामना पूर्ण होने की कामना करते है। जंगलों से घिरे इस पर्वत के तल पर अनेक मंदिर बने हुए हैं। चित्रकूट के लोकप्रिय कामतानाथ और भरत मिलाप मंदिर भी यहीं स्थित है।

राम घाट

राम घाट वह घाट है जहाँ प्रभु राम नित्य स्नान किया करते थे। इसी घाट पर भगवान राम भरत मिलाप मंदिर है और इसी घाट पर गोस्वामी तुलसीदास जी की प्रतिमा भी है। मंदाकिनी नदी के तट पर बने रामघाट में अनेक धार्मिक क्रियाकलाप चलते रहते हैं। घाट में गेरूआ वस्त्र धारण किए साधु–सन्तों को भजन और कीर्तन करते देख बहुत अच्छा महसूस होता है। शाम को होने वाली यहां की आरती मन को काफी सुकून पहुँचाती है।

जानकी कुण्ड

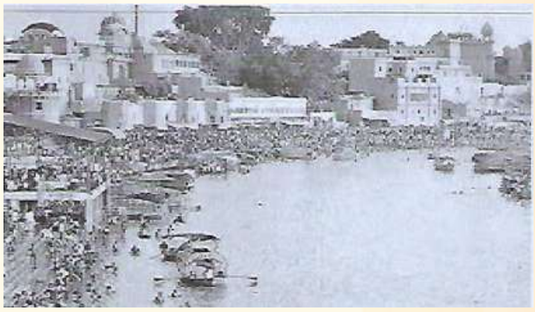

रामघाट से 2 किलोमीटर की दूरी पर मंदाकिनी नदी के किनार जानकी कुण्ड स्थित है। जनक पुत्री होने के कारण सीता को जानकी कहा जाता था। माना जाता है कि जानकी यहाँ स्नान करती थीं। जानकी कुण्ड के समीप ही राम जानकी रघुवीर मंदिर और संकट मोचन मंदिर हैं।

स्फटिक शिला

जानकी कुण्ड से कुछ दूरी पर मंदाकिनी नदी के किनारे ही यह शिला स्थित है। माना जाता है कि इस शिला पर सीता के पैरों के निशान मुद्रित हैं। कहा जाता है कि जब वह इस शिला पर खड़ी थीं तो जयंत ने काक रूप धारण कर उन्हें चोंच मारी थी। इस शिला पर राम और सीता बैठकर चित्रकूट की सुन्दरता निहारते थे।

अनसुइया अत्रि आश्रम

स्फटिक शिला से लगभग 4 किलोमीटर की दूरी पर घने वनों से घिरा यह एकान्त आश्रम स्थित है। इसी आश्रम में माता अनुसूइया दवारा माता सीता को ग्रहस्थ आश्रम की शिक्षा दी थी। इसी स्थान पर माता अनुसूइया द्वारा ब्रहमा,

विष्णु एवं महेष को शिशु बनाकर संकेतात्मक पालन किया था। माता अनुसूइया अपने पति मुनि अत्रि के लिए गंगा से जल नितदिन लाती थी, इस आश्रम में अत्रि मुनी, अनुसुइया, दत्तात्रेय और दुर्वासा मुनि की प्रतिमा स्थापित हैं।

गुप्त गोदावरी

नगर से 18 किलोमीटर की दूरी पर गुप्त गोदावरी स्थित हैं। यहाँ दो गुफाएँ हैं। एक गुफा चौड़ी और ऊँची है। प्रवेश द्वार संकरा होने के कारण इसमें आसानी से नहीं घुसा जा सकता। गुफा के अंत में एक छोटा तालाब है जिसे गोदावरी नदी कहा जाता है। दूसरी गुफा लंबी और संकरी है जिससे हमेशा पानी बहता रहता है। कहा जाता है. कि इस गुफा के अंत में राम और लक्ष्मण ने दरबार लगाया था।

हनुमान धारा

पहाड़ी के शिखर पर स्थित हनुमान धारा में हनुमान की एक विशाल मूर्ति है। मूर्ति के सामने तालाब में झरने से पानी गिरता है। कहा जाता है कि यह धारा श्रीराम ने लंका दहन से आए हनुमान के आराम के लिए बनवाई थी। पहाड़ी के शिखर पर ही 'सीता रसोई' है। यहां से चित्रकूट का सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है।

भरतकूप

कहा जाता है कि भगवान राम के राज्याभिषेक के लिए भरत ने भारत की सभी नदियों से जल एकत्रित कर यहाँ रखा था। अत्रि मुनि के परामर्श पर भरत ने जल एक कूप में रख दिया था। इसी कूप को भरत कूप के नाम से जाना जाता है। भगवान राम को समर्पित यहाँ एक मंदिर भी है। जब श्री राम 44 वर्ष के लिए वनवास आए थे तब भरत को अपने माता कैकैयी के व्यवहार पर काफ़ी दुख हुआ था। वे अयोध्या वासीयों को साथ लेकर श्रीराम को मनाने चित्रकूट आए थे, साथ में भगवान राम का राज्याभिषेक करने के लिए समस्त तीर्थों का जल भी लाये थे। लेकिन भगवान राम 14 वर्ष वनवास के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थे। इस पर भरत काफ़ी दुखी हुए और अपने साथ लाये समस्त तीर्थों के जल को वहीं के कुए में डाल दिया। केवल अपने साथ भगवान राम की खड़ाऊँ लेकर वापस चले गए। तभी से इस स्थल का नाम भरत कूप पड़ा।

आवागमन

वायु मार्ग

चित्रकूट का नजदीकी विमानस्थल प्रयागराज है। खजुराहो चित्रकूट से 85 किलोमीटर दूर है। चित्रकूट में भी हवाई पटटी बनकर तैयार है लेकिन यहाँ से उड़ानें अभी शुरू नहीं हुई हैं। लखनऊ और प्रयागराज हवाई अड्डों से भी चित्रकूट पहुँचा जा सकता है। प्रयागराज और लखनऊ से बस और ट्रेनें लगातार उपलब्ध हैं।

रेल मार्ग

चित्रकूट से 8 किलोमीटर की दूर चित्रकूट धाम निकटतम रेलवे स्टेशन है। प्रयागराज, जबलपुर, बांदा, दिल्ली, झांसी, हावड़ा, आगरा, मथुरा, लखनऊ, कानपुर, ग्वालियर, झांसी, रायपुर, कटनी, मुगलसराय, वाराणसी बांदा आदि शहरों से यहाँ के लिए रेलगाड़ियाँ चलती हैं। इसके अलावा शिवरामपुर रेलवे स्टेशन पर उतकर भी बसें और टू व्हीलर लिए जा सकते हैं। शिवरामपुर रेलवे स्टेशन की चित्रकूट से दूरी 4 किलोमीटर है।

सड़क मार्ग

चित्रकूट के लिए प्रयागराज, बांदा, झांसी, महोबा, कानपुर, छतरपुर, सतना, अयोध्या, लखनऊ, मैहर आदि शहरों से नियमित बस सेवाएँ हैं। दिल्ली से भी चित्रकूट के लिए बस सेवा उपलब्ध है। शिवरामपुर से भी बसें और टू व्हीलर उपलब्ध हैं यहाँ से चित्रकूट की दूरी 4 किलोमीटर है।

(के. सी. झा)
प्रभारी उप निदेशक

धाम ओरछा

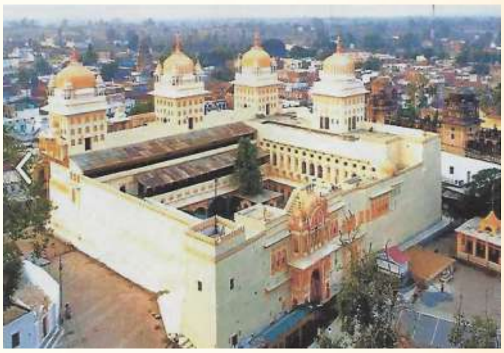

ओरछा भारत के मध्य प्रदेश राज्य के निवाड़ी ज़िले में स्थित एक ऐतिहासिक नगर है। इसकी स्थापना राजा रुद्र प्रताप सिंह बुंदेला द्वारा इसी नाम के राज्य की राजधानी के रूप में सन 1501 के बाद किसी समय हुई थी। ओरछा बुंदेलखण्ड क्षेत्र में बेतवा नदी के किनारे बसा हुआ है। ओरछा रामराजा सरकार के मंदिर, वीर हरदौल की वाटिका एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी वीर चन्द्रशेखर आजाद का अज्ञातवास स्थान के कारण प्रसिद्ध है। ओरछा के पास प्रतापपुरा औध्योगिक क्षेत्र है जो झाँसी शहर के भी नजदीक है। 16 सदी पूर्व झाँसी एक कस्वा था जिसकी राजधानी ओरछा थी।

रामराजा सरकार

पौराणिक कथाओं के अनुसार लगभग 600 वर्ष पूर्व ओरछा के तात्कालिक शासक श्री मधुकरशाह, कृष्ण भक्त थे, जबकि उनकी महारानी कुंवरि गणेश, राम उपासक थी, इसके चलते दोनों के बीच भक्ति विवाद हुआ, एक बार मधुकर शाह ने रानी को वृंदावन जाने का प्रस्ताव दिया पर उन्होंने विनम्रतापूर्वक उसे अस्वीकार करते हुए अयोध्या जाने की जिद कर ली. तब राजा ने रानी पर व्यंग्य किया कि अगर तुम्हारी भक्ति राम में सच हैं तो उन्हें अयोध्या से ओरछा लाकर दिखाओ। इस पर महारानी कुंवरि गणेश अयोध्या रवाना हो गईं, वहां 21 दिन उन्होंने तप किया इसके बाद भी उनके आराध्य प्रभु राम प्रकट नहीं हुए तो उन्होंने सरयू नदी में छलांग लगा दी कहा जाता है कि महारानी की भक्ति देखकर भगवान राम नदी के जल में ही उनकी गोद में आ गए। तब महारानी ने राम से अयोध्या से ओरछा चलने का आग्रह किया तो उन्होंने तीन शर्तें रख दीं, पहली, मैं यहां से जाकर जिस जगह बैठ जाऊंगा, वहां से नहीं उठूंगा. दूसरी, ओरछा के राजा के रूप विराजित होने के बाद किसी दूसरे की सत्ता नहीं रहेगी, तीसरी और आखिरी शर्त खुद को बाल रूप में पैदल एक विशेष पुष्य नक्षत्र में साधु संतों को साथ ले जाने की थी। महारानी ने ये तीनों शर्तें सहर्श स्वीकार कर ली। इसके बाद ही रामराजा ओरछा आ गए। तब से भगवान राम यहां राजा के रूप में विराजमान हैं।

संतों का मत रहा है कि रानी कुंवरि गणेश माता कौशल्या की अवतार थीं, जब भगवान राम अयोध्या त्याग कर वन चले गए थे तभी राम की मूर्ति को माता कौशल्या अपने साथ रखती थीं। भगवान राम के अयोध्या वापिस आने पर उन्होने माता से अनुरोध किया कि मैं आपके साथ हूँ और यह मूर्ति सरजू में विसर्जित कर देवें और उन्होने ऐसे ही किया था, कुंवरि गणेश उसी मूर्ति को ही अयोध्या से ओरछा लाई थीं।

राम के अयोध्या और ओरछा, दोनों ही जगहों पर रहने की बात कहता एक दोहा आज भी रामराजा मन्दिर में अंकित है, जो तुलसी दास ने लिखा है "खास दिवस ओरछा रहत हैं रैन अयोध्या वास".

16 वीं सदी में ओरछा के शासक मधुकर शाह ही एकमात्र ऐसे पराक्रमी हिंदू राजा थे जो अकबर के दरबार में बगावत कर चुके थे। इतिहास में यह बात दर्ज है कि जब अकबर के दरबार में तिलक लगाकर आने पर पाबंदी लगा दी गई थी, तब मधुकर शाह के तेवर के चलते अकबर को अपना फरमान वापस लेना पड़ा था। अयोध्या के संतों को यह भरोसा था कि मधुकर शाह की हिंदूवादी सोच के बीच राम जन्मभूमि का श्रीराम का यह विग्रह ओरछा में पूरी तरह सुरक्षित रहेगा। इतिहासकार बताते हैं कि रामराजा के लिए ओरछा के मंदिर का निर्माण कराया गया था, लेकिन रामराजा मंदिर में प्रतिस्थापित नहीं हुए थे। ओरछा और अयोध्या का संबंध करीब 600 वर्ष पुराना है। कहते हैं कि संवत 1631 में चौत्र शुक्ल नवमी को जब भगवान राम ओरछा आए तो उन्होंने संत समाज को यह आश्वासन भी दिया था कि उनकी राजधानी दोनों नगरों में रहेगी। तब यह बुन्देलखण्ड की 'अयोध्या' बन गया। ओरछा के रामराजा मंदिर की एक और खासियत है। एक राजा के रूप में विराजने की वजह से उन्हें चार बार की आरती में सशस्त्र सलामी गार्ड ऑफ ऑनर दिया जाता है। ओरछा नगर के परिसर में यह गार्ड ऑफ ऑनर रामराजाँ के अलावा देश में किसी को भी को नहीं दिया जाता है।

वीर हरदौल

हरदौल ओरछा के राजा वीर सिंह देव के बेटे थे। वीर सिंह देव ने अपने बड़े बेटे जुझार सिंह को ओरछा की राजगद्दी सौंपी और हरदौल को ओरछा का दीवान बनाया। जुझार सिंह कई बार मुगलों से उलझते रहते थे। ऐसे में रियासत का सारा काम हरदौल ही देखते थे। ओरछा के गजेटियर में इस बात का उल्लेख है कि हरदौल से जलकर

किसी ने राजा जुझार सिंह से शिकायत कर दी कि उनकी पत्नी चंपावती और हरदौल सिंह के बीच अवैध संबंध है। इस पर राजा जुझार सिंह ने रानी चंपावती को अपने हाथों से हरदौल को जहर परोसने का आदेश दिया। रानी जब यह न कर सकी, तो हरदौल ने अपनी भाभी का दामन पाक साफ रखने के लिए खुद जहर पी लिया।

भारत में भाई–बहन का त्योहार रक्षा बंधन पूरे उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। इस मौके पर आपको भाई और बहन के रिश्ते की एक ऐसी कहानी बता रहा है, जो बुंदेलखंड में तो हर घर में प्रचलित है, लेकिन बाहर कम ही लोग जानते हैं। यह कहानी करीब 400 साल पहले ओरछा के दीवान हरदौल, उनकी बहन कुंजाबाई और उनकी भाभी चंपावती की है। मरने के बाद भी भांजी की शादी में भात लेकर पहुंचे। जुझार सिंह और हरदौल की बहन कुंजाबाई ने जब अपने जीवित भाई जुझार सिंह को अपनी बेटी की शादी में आने का न्योता भेजा, तो जुझार सिंह ने कहा कि वह अपने प्रिय भाई हरदौल को आमंत्रित करे। इसके बाद कंजाबाई अपने भाई हरदौल की समाधि पर जाकर रोने लगी। बहन के रोने पर हरदौल प्रकट हुए और उन्होंने अपनी बहन से वादा किया कि वे भांजी की शादी में भात (शादी के मंडप में बहिन द्वारा भाई से भेंट एवं वस्त्र उढाना) लेकर जरूर आएंगे।

हरदौल ने अदृश्य रहकर अपनी भांजी की शादी में भात दिया। इसके बाद से बुंदेलखंड के हर घर में शादी के मोकै पर हरदौल को याद किया जाता है और उन्हें शादी में आमंत्रित किया जाता है। ओरछा के बुजुर्ग बताते हैं कि कुंजावती की बेटी की शादी में हुए चमत्कार के बाद आस–पास के हर गांव में ग्रामीणों ने प्रतीक के तौर पर एक–एक "हरदौल चबूतरा" का निर्माण कराया था, जो कई गांवों में अब भी मौजूद हैं। शादी–विवाह हो या यज्ञ–अनुष्ठानों का भंडारा, लोग सबसे पहले चबूतरों में जाकर राजा हरदौल को आमंत्रित करते हैं। कहा जाता है कि उन्हें निमंत्रण देने से भंडारे में कोई कमी नहीं आती। हरदौल वाटिका में वीर के उपयोगित वस्तुएं रखीं गई हैं।

वीर शहीद चंद्रशेखर आजाद

ओरछा में शहीद चंद्रशेखर आजाद ने वर्ष 1924–25 में डेढ़ साल का अज्ञातवास काटा था, शहीद के हाथ से बनाई गई कोठरी व उनका पत्थर–मिट्टी से बना तकिया–पलंग आज भी सुरक्षित हैं। देशप्रेमियों के लिए यह स्थान किसी तीर्थ से कम नहीं है।

चंद्रशेखर आजाद ने ओरछा से 5 किमी दूर इस स्थान पर अकेले ही एक कुआं खोदा था। हनुमानजी का छोटा सा मंदिर और रहने के लिए एक कोठरी बनाई थी। कुछ दूरी पर एक सुरंग भी बनाई थी जो एक किमी आगे खुलती थी। इनमें से कुआं और मंदिर तो संरक्षित है। लेकिन बाकी दोनों स्थान जर्जर हैं। आजाद के अज्ञातवास के रूप में मशहूर इस स्थान के पास ही एक म्यूजियम कुछ वर्षों पहले बनाया गया है। जहां उनके जन्म स्थान भावरा गांव और शहादत वाले स्थान प्रयागराज की मिटटी के कलश रखे गए हैं। आजाद यहां सन्यासी के भेश में रहे। उन्हें यहां लाने वाले स्थानीय स्वतंत्रता सेनानी मास्टर रूद्रनारायण ने उनका नाम ब्रहमचारी हरिशंकर रख दिया। तब उनसे मिलने कई क्रांतिकारी यहां आए थे। ये सभी यहां आजाद के साथ मंत्रणा करते थे।

(रमा झा)
पत्नी के. सी. झा
प्रभारी उपनिदेशक

शिमला की यात्रा

गत 3 वर्ष पहले हमने शिमला की यात्रा की थी और चिलचिलाती गर्मियों में एक हिल स्टेशन की यात्रा वास्तव में एक राहत भरा अनुभव था। हम अपने परिवार के साथ कालका के लिए रवाना हुए हमारे साथ एक पर्यवेक्षक थे। जो हमें रास्ते के सुंदर दृश्य का वर्णन कर रहे थे। हम सुबह कालका पहुंचे। वहाँ से रेल की मीटर गेज लाइन जो कि कालका से शिमला तक जाती है और यह लगभग 90 किलोमीटर लंबा मार्ग है। जो कि पहाड़ियों से गुजरता है। वहां तक पहुंचने में लगभग छः घंटे लगते हैं। ट्रेन जिग–जैग रेल लाईनों पर बहुत धीमी गति से चलती रही रेल में केवल 8 या 9 डिब्बे थे। आसपास के वातावरण में सुंदर दृश्य दिखाई दिये और ऊँची नीची पहाड़ियों ने मन मोह लिया था। कालका से शिमला की यात्रा अपने आप में एक अद्भुत अनुभव था।

शिमला के नजदीक पहुँचते पहुँचते हम तापमान में अंतर महसूस कर सकते थे। परेशान करने वाली गर्मी बहुत पीछे रह गई थी और हमने खुद को कम्बल में लपेट लिया था और ऊनी कपड़े पहन लिए थे।

शिमला में डलहौजी रोड पर स्थित एक होटल में हम लोग रुके थे। यह होटल पर्यटकों के बीच बहुत लोकप्रिय है। इसकी बेहतरीन सेवा के कारण इसे टूरिस्ट पैराडाइज के उपनाम से जाना जाता है। अगली सुबह हमने एक कार किराए पर ली और घूमने निकल गए। हमने शिमला में मोल रोड लोअर बाजार, जाखू हिल और प्रसिद्ध कालीवानी मंदिर देखा। हम कुफरी और नालदेश भी गए। ये स्थान इतने सुंदर हैं कि आगंतुकों का मन मोह लेते हैं। शिमला भारत के सबसे खूबसूरत हिल स्टेशनों में से एक है। यह इसलिए है कि अंग्रेजों ने इसे भारत सरकार की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया था। वर्तमान में तत्कालीन अंग्रेज गर्वनर के लाउंज को उन्नत अध्ययन केंद्र में बदल दिया गया है।

जाखू एक पहाड़ की चोटी है जो चारों ओर से ऊंचे पेड़ों से घिरी है। रोप–वे के माध्यम से हम जाखू तक पहुंच सकते है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान हनुमान जाखू से लक्ष्मण के लिए संजीवनी बूटी श्रीलंका लेकर गए थे।

हमारे द्वारा देखे गए कुछ प्रमुख स्थल निम्न प्रकार है।

मॉल रोड

खरीदारी का शौक रखने वालों लोगों का यहाँ हर वक्त जमावड़ा रहता है। चहल–पहल, शोरगुल, गरम कपड़े, खूबसूरत हस्तशिल्प, सभी वस्तुऐं आपको उचित दामों में मिल जाएगी। घूमने फिरने के बाद आप यहाँ आकर अपने इकट्ठे किए गए पैसों से अच्छी अच्छी आवश्यक वस्तुएँ खरीद सकते हैं। फरवरी मार्च का महीना यहाँ आने के लिए सबसे उचित समय है। सड़कों पर सजी आकर्षक वस्तुओं की दुकानें आपको अपनी ओर खरीद करने हेतु आकर्षित करती है।

क्राइस्ट चर्च

अपनी अदभुत वास्तुकला के लिए जाना जाने वाला यह चर्च उत्तर भारत का दूसरा सबसे प्राचीन चर्च है, अगर आप कुछ समय अकेले और शांति में बिताना चाहते हैं तो इससे बेहतर जगह कोई और नहीं है। इसका शांत माहौल ही पर्यटकों को यहाँ आने पर मजबूर करता है। शिमला के इस दर्शनीय स्थल को लोगों ने अपनी पसंद में बनाया है।

कुफरी

शिमला के पास स्थित यह स्थान भी एक छोटा पहाड़ी इलाका है यह स्थान यात्री मुख्य रूप से हाईकिंग, ट्रैकिंग आदि जैसी–रोमांचित गतिविधियों के लिए लोकप्रिय है। शिमला की बर्फबारी देखने का मौका भी यहाँ मिलेगा। यह जगह प्राकृतिक बगीचों व पिकनिक स्पॉट के तौर पर भी प्रसिद्ध है। अप्रैल से जून का समय आरामदायक व भीषण गर्मी से बचने के लिए व दिसंबर से फरवरी के यहाँ आने का सबसे उचित समय बर्फबारी के मौसम होने के कारण स्काइंग का लुत्फ उठा सकते है।

पाँच दिनों के बाद हमें वापस आना पड़ा समय कैसे व्यतीत हो गया हमें पता ही नहीं चला। स्थान इतने सुंदर थे कि हम पूर्ण वर्णन नहीं कर सकते वापस जाने का मन नहीं था। हालाँकि, यात्रा बहुत ही रोचक और आनंददायक थी। हमने सर्दियों के मौसम में यात्रा की थी और हम गर्मियों में भी यहाँ की यात्रा करना चाहते हैं।

(अमित ओझा)
नि० श्रे० लि०

अमरकंटक : माँ नर्मदा का उद्गम

नमोऽस्तु ते पुण्यजले, नमो मकरगामिनी।
नमस्ते पापमोचिन्यै, नमो देवि वरानने।।

(पवित्र जल वाली नर्मदे, तुम्हे नमन, मकरवाहिनी माँ तुम्हे नमन,
सुन्दर मुखवाली, पाप से मुक्त करने वाली देवी तुम्हे बारम्बार नमन)

"नमामि देवी नर्मदे हर हर"

प्राचीन काल से भारतीय साहित्य व पुरातत्व में अमरकंटक क्षेत्र का उत्कृष्ट स्थान रहा है, स्कन्द पुराण में इस क्षेत्र के धार्मिक व सांस्कृतिक महत्व का वर्णन मिलता है अमरकंटक क्षेत्र वर्तमान में मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले में स्थित है, एवं सतपुड़ा की मैकल पर्वत श्रंखला में फैला हुआ हैं। यह क्षेत्र ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, एवं पुरातात्विक एवं औषधीय सम्पदा से परिपूर्ण है, यहाँ कलचुरी कालीन विष्णव, शाक्त, गाणपत्य, शैव, तथा जैन धर्म से सम्बन्धित मंदिर व मूर्तियाँ है। अमरकंटक ऊचे पर्वतो, घने वनों, मंदिरों, गुफाओ, व जलप्रपातो से समृद्ध रमणीक स्थल के साथ प्राचीन धार्मिक पुरास्थल भी है। युगों युगों से पूजे जाने वाली, जिनके दर्शन मात्र से मानव पाप मुक्त हो जाता है, मानव सभ्यता, संस्कृति और परम्परा की प्रवाहिका, भारतवर्ष की 7 प्रमुख पवित्र नदियों में से एक माँ नर्मदा का उद्गम भी अमरकंटक से ही होता है, जिसे **माई की बगिया** भी कहा जाता है। नर्मदा नदी के दो महत्वपूर्ण जलप्रपात कपिल धारा, एव दुग्ध धारा भी यही पर स्थित है, यह प्राकृतिक सौन्दर्य, सैलानियो का आकर्षण का केंद्र हैं। अमरकंटक से सोनभद्र नदी का भी उदय होता है, इसे **सोण मुड़ा** कहते है, यह भी एक जलप्रपात है। इस क्षेत्र की विविधता, विलक्षणता, उदारता, औषधियों का भंडार एवं आरण्य स्वरुप इसके सौन्दर्य एवं पावनत्व के मूल कारण है।

अमरकंटक शहडोल से लगभग 20 किमी. की दूरी पर स्थित है, यहाँ से अमलाई (30 किमी) – अनूपपुर (53 किमी) राजेन्द्रग्राम (85 किमी) – होते हुए अमरकंटक (20 किमी) जाना होता है राष्ट्रीय राजमार्ग 43 से होते हुए आप अनूपपुर पहुँचते है, उसके बाद अमरकंटक मार्ग पर चलते हुए कुछ देर बाद पर्वतीय क्षेत्र (यह लगभ्रग 0–2 किमी का क्षेत्र है) शुरू हो जाता है, सावन के मौसम में हर तरफ हरियाली की बहार छाई हुई डोती है, हल्की हल्की ठण्ड और रास्ते में कोहरा रहता हैं, इतना सुंदर व मनोरम दृश्य आपको समस्त समस्याओं को भूलने पर मजबूर कर देता है।

अमरकंटक मार्ग पर ही सड़क के किनारे एक व्यू पॉइंट बना हुआ है, जो पर्यटकों का आकर्षण का केंद्र है, यहाँ सड़क के एक ओर की गहरी खाई में घने कोहरे से ढके हुए जंगल, दूसरी ओर ऊंचा पडाड़ है। हरे भरे घने जंगल के बीच सिर्फ पंछियों के चहचहाने, ठंडी ठंडी हवाओ, पेड़ो के पत्तो की आवाज़ सुनाई पड़ती है। शोर से कोसो दूर, शांत मन के साथ चैन से कुछ देर प्रकृति की गोद में बैठने पर आपको अपने जिन्दा होने का अहसास होता है।

आगे बढते हुए राजेंद्रग्राम के गुजर जाने के बाद फ़िर से पर्वतीय क्षेत्र शुरू हो जाता है, लगभग 20 किमी चलने पर इंदिरा गाँधी जनजातीय विश्वविद्यालय स्थित है एवं पास ही मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग का मिडवे रीट्रीट है, जंगल के बीच बने इस मिडवे रीट्रीट के पास बड़ा सा बांध बना हुआ है, आकाश में काले घने बादल और पानी पर फैली सफेद धुएं की चादर बहुत ही सुन्दर दिखाई देती है। तालाब के किनारे, ठण्डी ठण्डी हवा, और गरमा गरम चाय–पकोड़े, सारी थकान मिट सी जाती है।

यहाँ से अमरकंटक बस कुछ ही दूरी है, जैसे ही आप अमरकंटक पहुँचते है, हर तरफ सिर्फ आश्रम, और मंदिर ही पाते है। मंदिर प्रांगण का बड़ा सा सफेद प्रवेश द्वार है, प्रांगण के बाहर स्नान के लिए भी एक अलग कुण्ड बना हुआ है, ब्रम्हाण्ड पुराण के अनुसार नर्मदा स्नान का महत्व अन्य नदियों से सौ गुना अधिक है, माना जाता है कि माँ गंगा भी जब बहुत प्रदूषित हो गई थी तब गंगा ने भी नर्मदा में डुबकी लगाई थी। मंदिर प्रांगण में भी सफ़ेद मंदिरों

के बीच आप माँ नर्मदा का कुण्ड और मुख्य मंदिर पायंगे। नर्मदा मंदिर के अलावा और भी अन्य मंदिर स्थित है, मंदिर में दर्शन और पूजा कर, परिक्रमा करने के बाद कुछ देर कुण्ड के किनारे बैठे, यहाँ कुण्ड में मछलिया भी है, साथ डी कुण्ड में कुछ शिव लिंग भी स्थापित है, जिनका अभिषेक किया जाता हैं मंदिर में मिलने वाले मोहनभोग और नारियल के लड्डू का प्रसाद जरुर ले।

भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण द्वारा पास में स्थित कलचुरी कालीन मदिरों का रखरखाव किया जाता है, लगभग 1,000 साल पुराने ये मंदिर आज भी अडिग खड़े रहकर अपनी मजबूत वास्तुकला का परिचय देते है, हरी घास का मैदान और उनके मध्य स्थित कर्ण मंदिर (यजा कर्ण द्वारा निर्मित एक ही आधार पर तीन मंदिरों का समूह), शिव मंदिर, छोटा सा तालाब है, पूरा परिसर बहुत सुन्दर दिखता है, यह आपको स्वर्णिम इतिहास, कला, आध्यात्म की कहानी बयान करता है।

मंदिर से बाहर निकलकर आप नर्मदा व सोन नदी के उद्‌गम के दर्शन के लिए आगे जाते है, पहाडो के बीच पहले सोनमुड़ा आता है, यहाँ सोनभद्र नदी (सोन नदी) एक पेड़ के तने से निकलती है, कुछ दूरी पर झरने का रूप लेकर गढरी खाई में गिरती है। यहाँ पर पर्यटको के लिए व्यू पॉइंट भी बना हुआ है, जहाँ से नदी का खाई में गिरता हुआ सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। कुछ दूरी पर नर्मदा नदी का उदगम माई की बगिया है। यहाँ नर्मदा नदी पत्थरों में से निकलती है, जिसके लिए एक छोटा सा कुण्ड और मंदिर बनाया गया है। यहाँ पर पयर्टक के पिकनिक मनाते हुए, और बन्दर पेड़ो पर अटखेलिया करते नज़र आ जाएँगे। पूरा क्षेत्र पेड़ो से इस तरह ढका हुआ है कि ऊपर देखने पर आपको आकाश– दिखाई ही नही देगा।

नर्मदा उदगम से लगभग 5 किमी की दूरी पर कबीर चबूतरा हैं, माना जाता है कि यहाँ पर संत कबीर ध्यान किया करते थे और यही पर उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ, प्रकृति के बीच एक कुटी भी और छोटा सा पानी का तालाब सा बना हुआ हैं। कुछ किताबो में यहाँ पर संत कबीर और गुरु नानक साहिब के मिलने की बात भी लिखी गई है। आगे चलने पर आप कपिल धारा जल प्रपात पर पहुचते है, यह नर्मदा नदी का सबसे पहला और 100 फूट गहरा जल प्रपात है, आम दिनों में यह झरने की तरह छोटा लगता है किन्तु बारिश के मौसम में ये अपने सी रूप में बढता है, पर्यटक पत्थरो के बीच बने पगडंडियों से होते हुए नीचे उतरते है, नीचे ही कुछ दूरी पर दुग्ध धारा जलप्रपात भी ह। अमरकंटक के पर्वतो में और भी कई झरने, जल प्रपात, जोझिला नदी का उद्‌गम, छोटे–छोटे तालाब, कभी न देखे पेड़, खूबसूरत फूलो से भरे पौधे आपको देखने को मिलेंगे।

अमरकंटक, ब्रम्हाण्ड पुराण के अनुसार सर्वोत्तम पर्वत माना गया है, यही पर रावण और वाणासुर ने शिव की आराधना की थी। स्कन्द पुराण के अनुसार युधिस्ठिर सहित पांचो पांडवो ने भी यह कुछ दिन बिताये थे और योग साधना सीखी। श्री राम व लक्ष्मण ने भी यहाँ साधना की थी। अमरकंटक ब्रम्हाण्ड की श्रेष्ठ जगह मानी जाती है, किंवदन्तियो के अनुसार त्रिदेवो ने इसे अपना योग व ध्यान का केंद्र बनाया था। ऐसे ऐतिहासिक, प्राकृतिक सौन्दर्य, पौराणिक महत्ताओ वाले, देवो की प्रिय, औषधीय पौधों से भरी, पवित्र नदी माँ नर्मदे की उदगम स्थलि अमरकंटक के दर्शन कर मैं धन्य हो गया। आप भी इस सुन्दर स्थल की यात्रा जीवन में एक बार अवश्य करे, और अतुल्य भारत में स्थित बहुत ही खुबसूरत स्थानों में से एक का अनुभव करे।

हिंदुस्तान का दिल देखो।

आकाश पाठे
(उच्च वर्ग लिपिक)
शाखा–अमलाई

भारत में महिला सशक्तिकरण से संबंधित कानून

वर्तमान दौर महिला सशक्तिकरण का दौर है आज महिलाएं आँगन से लेकर अंतरिक्ष तक पहुँच गयी हैं लेकिन फिर भी कुछ क्षेत्रों में महिलाओं की हालत दयनीय बनी हुई है। इसलिए महिलाओं को समाज में और भी सशक्त बनाने के लिए सरकार ने घरेलू हिंसा अधिनियम (2005), दहेज निषेध अधिनियम (1961), हिंदू विवाह अधिनियम (1955) और न्यूनतम मजदूरी अधिनियम (1948) जैसे कानून बनाये हैं। इस लेख में ऐसे ही कुछ महिला सशक्तिकरण के लिए बनाये गए कानूनों के बारे में बताया गया है।

भारत में महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई अधिनियम बनाये गये हैं जिनमे कुछ इस प्रकार हैं:

1. **न्यूनतम मजदूरी अधिनियम (1948)** :– यह अधिनियम पुरुष और महिला श्रमिकों के बीच मजदूरी में भेदभाव या उनको मिलने वाली न्यूनतम मजदूरी में भेदभाव की अनुमति नहीं देता है।
2. **खान अधिनियम (1952) और कारखाना अधिनियम(1948)**:– इन दोनों अधिनियम में यह प्रावधान है कि महिलाओं को 7 P.M. से 6 A.M. के बीच में काम पर नही लगाया जा सकता है और इसके साथ ही काम के दौरान उनकी सुरक्षा और कल्याण का भी ध्यान रखना भी अनिवार्य है।
3. **हिंदू विवाह अधिनियम (1955)**:– के द्वारा एक समय में एक ही पति या पत्नी रखने का प्रावधान है। इसमें महिला और पुरुष दोनों को तलाक और विवाह के सम्बन्ध में सामान अधिकार दिए गए हैं।
4. **हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम (1956)**:– में मातापिता की संपत्ति में पुरुषों के साथ महिलाओं को भी सामान अधिकार दिए हैं। अर्थात यदि लड़की चाहे तो अपने पिता की संपत्ति में हक़ बंटा सकती है।
5. **अनैतिक देह व्यापार (रोकथाम) अधिनियम (1956)**:– के द्वारा महिलाओं और लड़कियों के यौन शोषण के लिए उनकी तस्करी की रोकथाम के प्रावधान हैं। दूसरे शब्दों में यह अधिनियम वेश्यावृत्ति के उद्देश्य से महिलाओं और लड़कियों की तस्करी की रोकथाम के लिए बनाया गया है।
6. **दहेज निषेध अधिनियम (1964)**:– इस अधिनियम के द्वारा शादी के पहले या बाद में महिलाओं से दहेज़ और देना दोनों ही अपराध की श्रेणी में आता है।
7. **मातृत्व लाभ अधिनियम (1964)**:– यह अधिनियम महिलाओं को बच्चे के जन्म से पहले 13 सप्ताह और जन्म के बाद के 13 सप्ताह तक वैतनिक अवकाश (Paid Leave) प्रदान करता है ताकि वह बच्चे की पर्याप्त देखभाल कर सके। इस गर्भावस्था के दौरान महिला को रोजगार से बाहर निकालना कानूनन जुर्म है।
8. **गर्भावस्था अधिनियम (1974)**:– के द्वारा कुछ विशेष परिस्थितियों (जैसे बलात्कार की पीड़ित महिला या लड़की या किसी बीमारी की हालत में) में मानवीय और चिकित्सीय आधार पर 24 सप्ताह तक के गर्भ को समाप्त करने की अनुमाति दी जा सकती है। वासात्य परिस्थितियों में 20 सप्ताह के गर्भ को गिराने की अनमति दी गयी है।
9. **समान पारिश्रमिक अधिनियम (1976)**:– यह अधिनियम कहता है कि किसी समान कार्य या समान प्रकृति के काम के लिए पुरुषों और महिलाओं दोनों श्रमिकों को समान पारिश्रमिक का भुगतान प्रदान किया जायेगा। साथ ही भर्ती प्रक्रिया में महिलाओं के साथ लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव को रोकता है।

10. **महिलाओं का अश्लील प्रतिनिधित्व (प्रतिषेध) अधिनियम, (1986)**:– यह अधिनियम महिलाओं को विज्ञापनों के माध्यम से या प्रकाशन, लेखन, पेंटिंग या किसी अन्य तरीके से महिलाओं के अभद्र प्रदर्शन को प्रतिबंधित करता है। **सती (रोकथाम) अधिनियम (1987)**:– यह अधिनियम सती प्रथा (पति की मृत्यु के बाद पत्नी को जबरन चिता में जलाना) का देश के किसी भी भाग में प्रचलन या उसके महिमामंडन को अपराध घोषित करता है। किसी भी महिला को सती होने के लिए बाध्य नही किया जा सकता है।

11. **राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम (1990)**:– सरकार ने इस आयोग का गठन महिलाओं के संवैधानिक और कानूनी अधिकारों और अन्य सुरक्षा उपायों से संबंधित सभी मामलों का अध्ययन और निगरानी करने के लिए किया था।

12. **घरेलू हिंसा अधिनियम (2005)**:– के द्वारा महिलाओं को सभी प्रकार की घरेलू हिंसा (शारीरिक, यौन, मानसिक, मौखिक या भावनात्मक हिंसा) से संरक्षण का प्रावधान किया गया है। इसमें उन महिलाओं को भी शामिल किया गया है जो दुर्व्यवहार की शिकार हो चुकी हैं या दुर्व्यवहार करने वाले के साथ रह रहीं हैं।

13. **कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम (2013)**:– इस अधिनियम में सार्वजनिक और निजी, संगठित या असंगठित दोनों ही क्षेत्रों में सभी कार्यस्थलों पर महिलाओं को यौन उत्पीड़न से सुरक्षा प्रदान करता है.

निम्नलिखित अन्य कानूनों में महिलाओं के लिए कुछ अधिकार और सुरक्षा उपायों भी शामिल हैं:

I. कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम (1948)

II. बागान श्रम अधिनियम (195)

III. बंधुआ श्रम प्रणाली (उन्मूलन) अधिनियम (1976)

IV. कानूनी चिकित्सक (महिला) अधिनियम (1923)

V. भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम (1925)

VI. भारतीय तलाक अधिनियम (1896)

VII. पारसी विवाह और तलाक अधिनियम (1936)

VIII. विशेष विवाह अधिनियम (1954)

IX. विदेशी विवाह अधिनियम (1969)

X. भारतीय साक्ष्य अधिनियम (1872)

XI. हिंदू दत्तक ग्रहण और रखरखाव अधिनियम (1956)

भारत में इतने सब कानूनों के बावजूद भी महिलाओं की स्थिति विकसित देशों की तुलना में बहुत ही दयनीय है। ग्रामीण इलाकों में तो आज भी महिलाओं को पुरुषों की पैरों की जूती के बराबर माना जाता है इसका मुख्य कारण महिला अशिक्षा, आर्थिक परतंत्रता और महिला अधिकारों के बारे में जानकारी का अभाव है।

(माधवी सिंह)

डी.सी.बी.ओ बीना

आधुनिक भारत के निर्माण में डा. अम्बेडकर का योगदान

"यदि हम एक संयुक्त एकीकृत आधुनिक भारत चाहते हैं तो सभी धर्मों के शास्त्रों की संप्रभुता का अंत होना चाहिए"

भारत जैसा महान देश जिस पर सदियों तक गैरों की हुकुमत रही इस विविधताओं वाले देश को आजाद कराने के लिए कई वीरों ने अपना बलिदान दिया। आजादी के पश्चात इस समग्र भारत वर्ष का निर्माण एक बहुत बड़ी चुनौती थी। इस आधुनिक भारतवर्ष के निर्माण में कई राष्ट्रनिर्माताओं ने अपना योगदान दिया। इन्ही राष्ट्रनिर्माताओ के क्रम में देश की काया में संविधान रूपी प्राणों का संचार करने वाले डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर का बहुत अमूल्य योगदान रहा। युं तो हर राष्ट्रनिर्माता ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया परन्तु बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर का योगदान महत्वपूर्ण इसलिए हो जाता है क्योंकि वे एक ऐसे तबके से आते थे जिसे सदियों से समाज के हासिये पर धकेल कर रखा जाता था। समाज के अंतिम छोर से उठकर अपनी शिक्षा और मेधा के दम पर डॉ. अम्बेडकर ने भारत का वैश्विक गौरव बढ़ाया, देश को एक नया आयाम दिया, देश को एक नई आत्मा प्रदान की।

कोरोना महामारी के प्रति डॉ. अम्बेडकर की दूरदर्शिता :–

यदि आधुनिक भारत की बात की जाए तो आधुनिक भारत के समक्ष खड़ी एक ज्वलंत आपदा कोविड– 19 महामारी पर विचार करना बेहद जरूरी हो जाता है। आज सम्पूर्ण राष्ट्र भी डॉ. अम्बेडकर के विचारों से उस कोरोना महामारी से लड़ रहा है। भारत देश के राष्ट्रनिर्माताओं ने कोरोना महामारी और राष्ट्रीय आपातकाल से निपटने के लिए देश को एक सशक्त संवैधानिक ढांचा प्रदान किया। उस दृष्टि से देखे तो संविधान शिल्पी डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने बहुत दूरदर्षिता दिखाई।

डॉ अम्बेडकर ने अपने समापन भाषण में कहा था कि संविधान को लेकर ऐसे आरोप है कि इसमें केंद्र को बहुत शक्तिया देकर राज्यों को महज नगर निकायों तक सीमित कर दिया गया है। लेकिन यह आरोप न केवल अतिरेकपूर्ण है बल्कि संविधान के लक्ष्यों की नासमझी को भी दर्शाता है।

कोरोना जैसे अदृश्य दुश्मन का सामना करने के लिए एक संयुक्त कमान बनाने की प्रतिबद्धता ने केंद्र सरकारो, राज्य सरकारो, स्वास्थ्य विशेषज्ञों एवं राज्य स्तरीय संस्थाओं को एकजुट कर दिया।

एक आरोप यह भी था कि केन्द्र को शक्ति इसलिए दी गई ताकि वह राज्यों पर अपने फैसले थोप सके। परन्तु डॉ. अम्बेडकर ने समझाया था कि यह संविधान का सामान्य प्रावधान नहीं है, इसका उपयोग मात्र आपातकाल एवं राष्ट्रीय आपदा के समय हो सकता है। यह कहते हुए उनके दिमाग में केवल अनुच्छेद ही नही थे बल्कि सातवी अनुसूची में केंद्र द्वारा कानून बनाने की शक्तियों का भी मान था।

जैसा कि समवर्ती सूची में आइटम 28 केन्द्र को यह अधिकार देता है कि वह एक राज्य से दूसरे राज्य में संक्रमण रोकने के लिए कानून बना सकता है। मौजूदा कोरोना संकट में आपदा प्रबंधन अधिनियम को उसी संदर्भ में देखा जा सकता है।

डॉ अम्बेडकर को समर्पित कविता

आओ झुककर नमन करे,
जिसे जग ने विश्वरत्न पुकारा।
जिसने हमारे जीवन को संवारा।
अपने आज को देख,
औरो का भविष्य सुधारा
आओ झुककर सलाम करे,
जो बहुजनो का मसीहा है कहलाया।
जिसने है शिक्षा, संघर्ष, और सगठन का पाठ पढ़ाया।
भारत गणराज्य का है जिसने सविधान बनाया।
आओ झुककर याद करे,
जिसने है सिर उठाकर चलना सिखाया,
आओ झुककर नमन करे,
जिसे हम सबने बाबा साहब है पुकारा।

(निखिल डांगी)
नर्सिंग अधिकारी
डीसीबीओ बीना

झुक नहीं सकते

अटल बिहारी वाजपेयी राजनीतिज्ञ होने के साथ–साथ एक कवि भी थे। मेरी इक्यावन कविताएँ अटल जी का प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। वाजपेयी जी को काव्य रचनाशीलता एवं रसास्वाद के गुण विरासत में मिले हैं। पारिवारिक वातावरण साहित्यिक एवं काव्यमय होने के कारण उनकी रगों में काव्य रक्त–रस अनवरत घूमता रहा है। उनकी सर्व प्रथम कविता ताजमहल थी। इसमें श्रृंगार रस के प्रेम प्रसूत न चढ़ाकर "एक शहंशाह ने बनवा के हसीं ताजमहल, हम गरीबों की मोहब्बत का उड़ाया है मजाक" की तरह उनका भी ध्यान ताजमहल के कारीगरों के शोषण पर ही गया। वास्तव में कोई भी कवि हृदय कभी कविता से वंचित नहीं रह सकता।

भारत को परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र बनाना

अटल सरकार ने 11 और 13 मई 1998 को पोखरण में पाँच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट करके भारत को परमाणु शक्ति संपन्न देश घोषित कर दिया। इस कदम से उन्होंने भारत को निर्विवाद रूप से विश्व मानचित्र पर एक सुदृढ वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया। यह सब इतनी गोपनीयता से किया गया कि अति विकसित जासूसी उपग्रहों व तकनीक से संपन्न पश्चिमी देशों को इसकी भनक तक नहीं लगी। यही नहीं इसके बाद पश्चिमी देशों द्वारा भारत पर अनेक प्रतिबंध लगाए गए लेकिन वाजपेयी सरकार ने सबका दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए आर्थिक विकास की ऊँचाईयों को छुआ।

कारगिल युद्ध

पाकिस्तान के तत्कालीन सेना प्रमुख परवेज़ मुशर्रफ की शह् पर पाकिस्तानी सेना व उग्रवादियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके कई पहाड़ी चोटियों पर कब्जा कर लिया। अटल सरकार ने पाकिस्तान की सीमा का उल्लंघन न करने की अंतरराष्ट्रीय सलाह का सम्मान करते हुए धैर्यपूर्वक किंतु ठोस कार्यवाही करके भारतीय क्षेत्र को मुक्त कराया।

अटल जी ने किशोर वय में ही एक अद्भुत कविता लिखी थी –"हिन्दू तन–मन हिन्दू जीवन, रग–रग हिन्दू मेरा परिचय", जिससे यह पता चलता है कि बचपन से ही उनका रुझान देश हित की तरफ था।

झुक नहीं सकते

टूट सकते हैं मगर हम झुक नहीं सकते
सत्ता का संघर्ष सत्ता से,
न्याय लड़ता निरंकुशता से,
अँधेरे ने दी चुनौती है,
किरण अन्तिम अस्त होती है।
दीप निष्ठा का लिए निष्कम्प
वज्र टूटे या उठे भूकम्प,
यह बराबर का नहीं है युद्ध,
हम निहत्थे, शत्रु है सन्नद्ध,
हर तरह के शस्त्र से है सज्ज,
और पशुबल हो उठा निर्लज्ज।
किन्तु फिर भी जूझने का प्रण,
पुनः अंगद ने बढ़ाया चरण,
प्राण–पण से करेंगे प्रतिकार,
समर्पण की माँग अस्वीकार।
दाँव पर सब कुछ लगा है, रुक नहीं सकते;
टूट सकते हैं मगर हम झुक नहीं सकते।

(कौशलेंद्र सिंह दांगी)
(फार्मासिस्ट) डीसीबीओ बीना

श्रम का महत्व

आधुनिक युग कम्प्यूटर का युग है। जिस प्रकार कम्प्यूटर को सुचारु रुप से चलाने के लिए एक कुशल कम्प्यूटर ऑपरेटर की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार स्वादिष्ट व पौष्टिक व्यंजन बनाने के लिए एक कुशल रसोइए की, एक सुन्दर भवन बनाने के लिए अच्छे कारीगरों की, अच्छे कपडों की सिलाई के लिए एक कुशल दर्जी की तथा मरीज़ का सही ढंग से इलाज करने के लिए एक कुशल चिकित्सक की आवश्यकता होती है। इन सभी को सफलता तभी प्राप्त होती है, जब वह अपने अपने क्षेत्र में ईमानदारी से श्रम करते है। ऐसा करने से यह सभी लोग सफलता की सीढ़ी पर आसानी से चढ़ जाते है। जो मनुष्य अपने जीवन में जितना ईमानदारी से परिश्रम करता है, उसे उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त होती है। गीता में श्रीकृष्ण ने भी कर्म करने पर बल दिया है। आज से 500 वर्ष पूर्व श्री गुरु नानक देव जी ने समस्त मानव जाति का "किरत करो, नाम जपो, वण्ड चखो" के सिद्धांत का उपदेश दिया था। इस सिद्धांत का अर्थ इस प्रकार हैः–

किरत करोः– मनुष्य को अपना कार्य ईमानदारी से करना चाहिए

नाम जपोः– मनुष्य को परमात्मा का नाम जपना चाहिए

वण्ड चखोः–आपस में बाँट कर खाना चाहिए

जिस प्रकार किसान के श्रम से समस्त मानव जाति का पेट भरता है, मजदूरों के श्रम से सभी कारखाने चलते है ठीक उसी प्रकार कर्मचारी राज्य बीमा निगम के कर्मचारी वर्ग व अधिकारी वर्ग के श्रम से कर्मचारी राज्य बीमा निगम उन्नति के पथ पर अग्रसर है। अतः उपरोक्त वर्णित तथ्यों को मध्यनजर रखते हुए श्रम के महत्व को झुठलाया नहीं जा सकता। अमेरिका रुस जापान व चीन इत्यादि सब श्रम के बल पर ही विकसित हुए है। सुंई से लेकर हवाई जहाज बनाने में श्रम की ही प्रयोग हुआ है। जो व्यक्ति श्रम से बचने की कोशिश करता है, उसे समाज द्वारा आवारा की उपाधि दी जाती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को श्रम का महत्व समझते हुए अपने कार्य का ईमानदारी से निष्पादन करना चाहिए।

(हरमीत सिंह)
शाखा प्रबधंक, डीसीबीओ,
क0रा0बीमा0निगम0
होशगांबाद

यात्रा वृतांत

!! वन का उपहार (कोडईकनाल)!!

वर्ष 2015 की बात है तब मेरी पोस्टिंग तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले में थी। मॉनसून के दौरान की बात है परिवार का कहीं घूमने का मन किया। पता किया तो कोडईकनाल पर्यटन स्थल जाना निश्चय किया। कार्यालय से आवश्यक स्वीकृति लेने के उपरांत मैं परिवार सहित कोडईकनाल छुट्टी मनाने के लिये यात्रा पर निकाल पड़ा। कैब द्वारा मदुरै से कोडईकनाल के लिए निकले, कोडईकनाल तमिलनाडु के डिंडिगुल जिले में स्थित खूबसूरत हिल स्टेशन है, यह. मदुरै से 120 कि.मी. दूर पलानी पहाड़ियों पर 7000 फूट की ऊंचाई पर स्थित है। तमिल में कोडईकनाल का अर्थ पवन का उपहारण है। शाम को कैब से कोडईकनाल पहुँचे, और होटल के रास्ते में ही हम ब्रायंट पार्क पहुँचे। पार्क घूमनें के लिए बागवानी और बागवानी के जुड़े पर्यटक बहुत अधिक आते हैं। पर्यटकों के लिए सुबह 9 बजे से शाम के 6 बजे तक की अनुमति रहती है। घूमते–घूमते रात काफी हो चुकी थी, इसलिए यहाँ से हम सीधे होटल चले गए।

दूसरे दिन सबसे हम पहले कोडेकनाल झील गए, झील का दृश्य ऊपर से देखने पर मन को आकर्षित करता है। यहाँ पर बोटिंग का भरपूर आनंद उठाने के साथ साथ घुड़सवारी का मज़ा उठाया और साथ ही दिलकश वादियों में थोड़ा आराम भी किया। प्रकृति के इस अप्रीतम सुंदरता को निहारते हुए समय कब और कैसे बीत गया इसका पता ही नहीं लगा। वहीं एक स्थानीय होटल में मसाला डोसा खाया और फिर कैब का ड्राइवर हमे डॉल्फिन नोज़ पॉइंट देखने के लिए ले गया। कोडैईकनाल का यह सबसे प्रसिद्ध स्थल है। रास्ते में, सबसे पहिले वट्टाकनाल वॉटरफॉल देखा फिर नीचे की ओर ट्रेकिंग करते हुए हम माउंटेन व्यू प्वॉइट पहुंचे जो कि अति सुंदर मनोहर दृश्य था, पहाड़ बादलों से ढके हुए थे ओर नीचे की तरफ बादल ही बादल दिखाई दे रहे थे। आगे हम डॉल्फिन नोज पहुँचे, वहाँ कुछ चट्टानें थी जो डॉल्फिन नोज के जैसी दिखाई दे रही थीं। आगे गुना गुफा देखने गए, इस गुफा में एक तमिल फिल्म गुना की शूटिंग हुई थी, जिसके बाद से इसका नाम गुना रखा गया। पर्यटकों की सुरक्षा के लिए गुफा में जाना मना है। यहाँ पेड़ों की बड़ी–बड़ी जड़ें हैं। वहाँ सूरज की रोशनी पेड़ों को चीरते हुए आ रही थी।

फिर हम कोकर्स–वॉक, के लिए टाउन की तरफ चले। प्रकृति के प्रेमियों को इस जगह की यात्रा जरूर करनी चाहिये। यह 01 कि.मी. का लम्बा पैदल सफर था। इस जगह पर लंबी घुमावदार सड़कें हैं। जिन पर सुंदर पेड़ और फूल लगे है। इस जगह पर एक टेलीस्कोप लगा है। जहां से आप घाटी और पहाड़ी के नीचे बसे शहर के दृश्य देख सकते हैं। हालांकि सर्दियों में यह धुंधता और डरावना जरूर हो जाता है, इसकी सुंदरता का कोई दूसरा विकल्प नहीं है। कोकर्स–वॉक में प्रवेश के लिए टिकट लेना पड़ता है। कोकर्स–वॉक तक जाने का सबसे अच्छा समय दोपहर 2.30 बजे से पहले यानी सूर्य के ढलने से पहले होता है। यहाँ से आगे कई दर्शनीय स्थल हैं जिनमेँ से सिल्वर कैसकेड फॉल्स, कोडईकनाल सोलर ओब्जेवेंट्री, ग्रीन वैली व्यू, पिलररॉक्स, करिजी, अंदावर मंदिर आदि प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं।

वहीं लोकल मार्केट से कुछ शॉपिंग की, शॉपिंग करते हुए रात हो चुकी थी, यहाँ से हम सीधे होटल गए। ट्रिप पूरी हो चुकी थी, अगले दिन हम इसकी सुंदरता और इसके साथ बिताए पल का चित्र संजोय वापिस मदुरै के लिए रवाना हो गए। यहाँ बिताए गए खूबसूरत पल मुझे हमेशा ही ताजगी देते रहेंगे और खुश करते रहेंगे।

कोडईकनाल कब जाएँ

कोडईकनाल घूमने जाने के लिए सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च महीने तथा अप्रैल से जून का माना जाता हैं। हालांकि यह भी सच है कि मॉनसून के दौरान इसकी खूबसूरती मे चार चंद लग जाते हैं। ढलते सूरज को ढँकते बादल एक जादुई समाँ बांध देते हैं।

कोडईकनाल का इतिहास

कोडईकनाल के इतिहास की सबसे दिलचस्प बात यह है कि इस पर्वतीय स्थल की खोज एक अमेरिकी व्यक्ति ने की थी। 1836 में कोडईकनाल को अपनी पहली पहचान एक वनस्पति व पुष्प प्रेमियों के स्वर्ग के रुप में मिली थी। साल 1845 में एक अंग्रेज मिशनरी ने यहाँ पहला घर बनाया था। इसके बाद अंग्रेजों ने इस गर्मियां बिताने के लिए अपना निवास स्थान बना लिया परन्तु 20 वीं शताब्दी के शुरुआत में जब यह जगह सड़क मार्गो द्वारा जुड़ा तो भारतीय सैलानी भी यहाँ आकर्षित होने लगे।

कोडईकनाल में कहाँ रुके

कोडईकनाल हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई द्वारा अनुबंधित–होटल "होटल तमिल नाडु" मे ठहरने की व्यवस्था है, जिस के लिए क.रा.बी. निगम क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई की सामान्य शाखा से संपर्क कर होटल बुक किया जा सकता है।

(देवेश झारिया)

शाखा प्रबंधक, शाखा कार्यालय

न्यू सुभाष नगर भोपाल

होशंगाबाद के शैलचित्र

"जिज्ञासा से उत्पन्न, अंकटा से प्रस्फुटित,
जिज्ञासा में विकसित, भौतिकता की सीढी से,
आध्यात्मिकता के शिखर पर पहुँचाने वाली
भारतीय कला अपना विशेष महत्व रखती है

मध्य प्रदेश में होशंगाबाद जिला मुख्यालय पर स्थित क0रा0बीमा0निगम (उप क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल) के अधीन दिनांक 02.08.2021 को प्रभावशील डीसीबीओ में मेरी पदस्थापना के परिणामस्वरुप दिनांक 15.08.2021 को कार्यालय से लगभग 3 किमी दूर आदमगढ पहाडी के शिलाओं पर अंकित आदिकालीन चित्रों के अवलोकन का अवसर प्राप्त हुआ। इन शैलाश्रयों में अंकित आदिकालीन चित्र अपने युग की कथा सुनाते है। वर्ष 1960 में भारतीय सर्वेक्षण के पुरातत्व विभाग की प्रागैतिहासिक शाखा द्वारा डी0आर0व्ही0 जोशी के मार्गदर्शन में यहाँ उत्खनन कार्य संपन्न हुआ था। परिणामस्वरुप पाषाण युग के औजार एंव बर्तन उपलब्ध हुए। प्राप्त सामग्री से तत्कालीन सभ्यता पर काफी प्रकाश पडता है। संभवत पूर्व पाषण युग से आदिमानव यहाँ रहने लगा था। पर्वत सरोवर और उर्वर भूमि में पल्लवित, पुष्पित गहन वल जानवरों के लिए भी अनुकूल वातावरण प्रस्तुत करते थे।

आदमगढ पहाडी में ग्यारह शैलाश्रय है जिनकी भित्तियों पर आदिमानव की सुन्दर चित्रकला दिखाई पडती है। पुरातत्व वेत्ताओं का अनुमान है कि ये शैलचित्र 1000 ई0पूर्व0 से 500 ई0पूर्व0 के मध्य बनाए गए थे। कुछ विद्वानों के अनुसार यह चित्रकला अधिक प्राचीन है। अधिकांश चित्र गेरुए रंग से निर्मित है। कहीं कहीं लाल रंग मिश्रण का भी प्रयोग हुआ है। इससे प्रतीत होता है कि इस चित्रकला का विकास दो बार में हुआ है। यह बात आश्चर्यजनक है कि इन रंगो में ऐसा कौन सा मिश्रण है जिससे हजारों वर्ष बीत जाने पर भी चित्रों की रेखाएं आजतक अमिट बनी हुई हैं। बडी–बडी चटटानों को काटकर तथा उनको चिकना बनाकर यह चित्र बनाए गए है अधिकांश चित्र अस्पष्ट है फिर भी उनसे यह प्रकट होता है कि आदिमानव जातियाँ युद्धप्रिय थी। भाला, बरछी, तीरकमान, कृपाण आदि उनके प्रिय हथियार थे। वे पैदल तथा घोड़े पर सवार होकर लड़ा करते थे। भित्त चित्रों से तो यह प्रतीत होता है कि यहाँ ऊँट व जिराफ भी पाये जाते थे। यद्यपि इतिहासकार इस बात से सहमत नहीं है क्योंकि ऊँट व जिराफ इस क्षेत्र के प्राणी नहीं थे। परन्तु 10वीं शिलाश्रय की दीवार पर अंकित लंबी गर्दन वाला जानवर कौन सा हो सकता है क्योंकि यह ऊँट जैसा ही दिखाई देता है। इस दीवार पर ऐसे अनेक चित्र अंकित है जो अन्य शैलाश्रयों की कलात्मक दृष्टि से अधिक सुन्दर है। दौड़ता हिरण, युद्ध के लिए सजा सजाया घोड़ा और हाथ में भाला लेकर उसपर सवार आदमी तथा हाथ में धनुष बाण लेकर युद्ध के लिए तत्पर वीरों के चित्र विशेष रुप से आकर्षक है। घोड़े के अतिरिक्त गाय, बैल, भैंस आदि के चित्र भी है।

मनुष्य में कला और सौन्दर्य के प्रति रुचि होना स्वाभाविक है। मनुष्य सांसारिक संघर्षो से जब घबरा जाता है तथा दैनिक निराकर्षक कार्यो से थक जाता है, तब वह मनोरंजन की राह सोचता है। आज भी हम देखते है कि संसार से ऊबा हुआ मानव महज शांति एंव सौन्दर्य की ओर, पहाड़ियों की ओर अथवा बाग बगीचों में जाकर अपना मनोरंजन कर दिल बहलाता है। शैलाश्रयों में बने नृत्य–संगीत के चित्र इस तथ्य के सजीव उदाहरण हैं।

भोपाल से लगभग 75 कि0मी0 दूर स्थित आदमगढ शैलाश्रय होशगांबाद जिले की प्रागैतिहासिक कला का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है, निश्चय ही दर्शनीय है। मध्य प्रदेश की जीवन रेखा के रुप में माँ नर्मदा के दक्षिण तट क्षेत्र पर स्थित इस प्रागैतिहासिक कालीन शैलाश्रय का अवलोकन निश्चय की रेल यात्रा करने वालों के लिए भी सुगम है।

(सौरभ पांडेय)
फार्मासिस्ट डीसीबीओ,
क0रा0बीमा0निगम0
होशगांबाद

श्री गणेश : क्यों प्रथम पूजनीय हैं ?

महादेव श्री शिव जी को पति के स्वरुप में प्राप्त करने के लिए देवी गौरी ने कठिन तपस्या की थी, तपस्या के फ़ल स्वरुप शिव जी प्रसन्न हुए और देवी गौरी को पत्नी रूप में स्वीकार करने का वचन दिया। देवी सती के शरीर में कई वर्षो से तपस्या करते–करते धुल और मिट्टी से मैल जमा हो गया था जिससे देवी सती को शिव जी ने स्नान करने की सलाह दी, तथानुसार देवी सती समुद्र में स्नान करने गई, लेकिन सती की सुन्दरता को देख कर वरुण देव मोहित हो गए और उन्होंने सती को पत्नी रूप में पाने के लिये अपना प्रस्ताव रखा, इस अभद्रता से नाराज़ होकर सती जाकर शिव जी से शिकायत की शिव ज़ी ने बहुत ही सहज भाव से देवी सती को पास में बहते डुए झरने में स्नान करने हेतु कहा, और वरुण देव को बाद में देखने हेतु बोला जिसका परिणाम अंत में समुद्र मंथन से पूर्ण कर उसके अंहकार को तोडा गया जब देवी सती झरने में स्नान करने गई, चूँकि झरना में नहाते वक्त कोई भी आ सकता था इस बात को देखते हुए उन्होंने अपने लिए एक प्रहरी की रचना अपने ही शरीर की मैल से की, जोकि वास्तव में मानव स्वरूप का था, जब गौरी स्नान करने गई तब प्रहरी जोकि श्री गणेश नाम से जाने जाते हैं, को आज्ञा थी कि कोई भी इधर न आने पाए लेकिन तभी शिव जी वहां पर आ पहुचे, शिव जी त्रिकाल दर्शी थे, उन्होंने देखा और देवी सती की रचना को देखकर के विचार किया की देवी बहुत ही भोली सरल स्वभाव की है यह जिस जीव की रचना की है वह आगे चल कर शिव पुत्र कहलायेगा इस तरह मानव के पुत्र और हमारे पुत्र में कोई अंतर नही होगा अतः उसे सुधार करने हेतु उन्होंने मानव के वो अंग जोकि दोषपूर्ण वासना युक्त होते हैं उन्हें परिवर्तित करते हुए इस प्रकार से रचना की एवं पूर्ण सगुण रूप का आकार दिया, जोकि श्री गणेश के नाम से प्रसिद्ध हुआ और जिसे आज हर पूजा में प्रथम स्थान प्राप्त हैं।

श्री गणेश करने का अर्थ ही कार्य का प्रारंभ माना जाता है, शास्त्रों में देवताओ के स्वरुप का विश्लेषण किया गया हैं उदाहरण के लिए श्री गणेश का स्वरूप का विशेषण सरल रूप से किया जा रहा हैः

श्री गणेश का रूप अद्भुत है शरीर मनुष्य का है जिसमे सिर हाथी का है, पेट बड़ा है आदि इन सब बातो को अध्ययन किया जाये तो श्री गणेश के प्रथम पूजन की बात स्पष्ट हो जाती है।

हाथी के आँखों की रचना ऐसी होती है की उसे छोटी वस्तु भी बड़ी दिखाई देती है कार्य सिद्धि के लिए आवश्यक है की छोटी से छोटी समस्या को भी बड़े समझ कर निपटे "सुचीमुखा हयनर्था इति लोकप्रवादः" कहावत हैं कि विपत्तियां प्रारंभ में सुई की नोक के बराबर होती हैं – हाथी के कान बहुत लम्बे होते है, जोकि प्रतीक हैं खूब सुनने का, कार्य सिद्धि के लिए खूब सुनने की क्षमता का विकास आवश्यक है कई समस्याए अच्छी तरह सुन लेने से समाप्त हो जाती है।

श्री गणेश लम्बोदर है, बड़ा पेट होना एक प्रचलित मुहावरा है जिसका अर्थ होता हैं कही सुनी समझ बूझ कर बातों को खूब संभाल कर रखना। जिसकी मन की बात को एक या कई मिलकर भी न जान पाए वह धनहीन भी रहे तो पृथ्वी का राजा बनने में समर्थ है, मतलब यह है कि खूब सुनकर अपना मत निश्चित करे, तथा उसको गुप्त रखते हुए कार्य सिद्धि हेतु प्रयास करें।

श्री गणेश एक दंत हैं, हाथी के बाहरी दो दांतों में से एक ही दंत श्री गणेश के पास है दूसरा कटा छिपा रहता है, आवश्यक है कि कार्य के तरीकों का वह भाग जो ज्ञान विवेक पर आधारित है स्पष्ट दिखे, जो कुज्ञान एवं कुटिलता से प्रति है वह छिपा रहे।

हाथी की जिव्हा उलटी दिशा में रहती है, यानि दंत से कंठ की ओर, अतः जिव्हा का नुकीला बाण दूसरे की ओर न हो न फेका जाये। बोलचाल एवं शब्दों के उपयोग में सतर्कता रखी जाये।

हाथी को नाक के बदले एक लम्बी सूंड रहती है लम्बी और ऊँची नाक प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है –श्री गणेश चूहे पर सवारी करते है भारतीय दर्शन में जिस तरह से गाय को सत्व गुण, सिंह को रजो गुण का, भैंस तथा सर्प को तमो गुण का प्रतीक माना गया है इसी तरह चूहे को तर्क का प्रतीक माना गया है। परन्तु साधक का तर्क पर नियंत्रण होना सवारी करना परम आवश्यक है अन्यथा तर्क निष्प्रयोजन ही उपयोगी साधनो को भी कुतर डालेगा, इन समस्त गुणों के कारण श्री गणेश प्रथम पूज्य हैं।

।। जय श्री गणेश ।।

(हरी कृष्ण मिश्रा)
शाखा प्रबंधक शाखा
अमलाई

लड़का-लड़की एक समान ?

जीव और प्रकृति द्वारा ही सृष्टि का निर्माण हुआ है। शक्ति के बिना शिव को पूर्ण नहीं कहा जाता है। वास्तव में नर तथा नारी के सहयोग से ही सृष्टि का विकास होता है। कामायनी में श्रृद्धा मनु से कहती हैं–

"बनो संसृति के मूल रहस्य,
तुम्हीं से फैलेगी यह बेल,
विश्व भर सौरभ से भर जाए,
सुमन के खेलो सुदंर खेल।"

पुरूष के बिना नारी का जीवन अधूरा है। पुरूष और स्त्री एक दूसरे के पूरक हैं। इसमें संदेह नहीं कि सृष्टि के अस्तित्व के लिए दोनों का ही होना अनिवार्य है। प्राचीन भारत के इतिहास के पन्नों को पलटें तो नारियों की गौरव गाथाओं की कहानियाँ भरी पड़ी हैं, जो कि यथार्त सत्य है। हमारे पूर्वजों का कहना है कि

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमते तत्र देवता"

यहाँ पूजा से तात्पर्य उनकी मान मर्यादा, अधिकारों की रक्षा करने से है। उन्हें लक्ष्मी तथा गृह देवियों के नाम से संबोधित किया जाता है। पुरूष के समान उन्हें शिक्षा मिलती थी। शकुंतला, सीता, अनुसुइया, दमयंती, सावित्री आदि स्त्रियाँ इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। समय परिवर्तनशील है, आज के समय में मानव लड़की की अपेक्षा लड़के को अधिक महत्व देता है। ईश्वर ने पुरूष को नारी की अपेक्षा अधिक शक्ति प्रदान की है। वह स्वयं को नारी का संरक्षक मानता है। पुरूष प्रायः धन का अर्जन करता है और नारी घर का दायित्व संभालती है। भारत में ही नहीं अपितु विश्व के विकसित देशों में भी नारी की स्थिति सोचनीय है, उन्हें उचित सम्मान नहीं मिलता। उनको पुरूष के अहम से पग–पग पर जूझना पड़ता है।

भारत के गाँवों में स्त्रियों को पिता, पति अथवा पुत्र के अधीन रहना पड़ता है। ग्रामीण स्त्रियाँ प्रायः तंगी का शिकार होती हैं। उनके स्वास्थ्य और शिक्षा के विषयों में भी अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है। वास्तव में आधुनिक युग में कहने के लिए लड़का–लड़की एक समान हैं परन्तु इसके पीछे भी रहस्य कुछ और ही है, तो असंख्य कन्या भ्रूणों को उनके गर्भ में ही नष्ट किया गया था। उसके परिणाम यह निकल रहे हैं, कि बालक–बालिका के प्रतिशत में काफी अंतर आ गया था। अधिकांश माता–पिता लड़कियों को बोझ स्वरूप देखते हैं, दहेज प्रथा भी भयावतः लड़की के जीवन के आकाश में धूमकेतु के रूप में छा जाती है। लड़कियाँ घर के बाहर निकलने में स्वयं को असुरक्षित महसूस करती हैं। अनेक लड़कियाँ तो विवाह के पश्चात जीवन भर तनाव सहने को विवश हो जाती है। यह स्थिति केवल अशिक्षित लड़कियों की ही नहीं बल्कि कहीं–कहीं शिक्षित लड़कियाँ भी इस यातना का शिकार हो जाती हैं।

यह हर्ष का विषय है कि आधुनिक नारी की स्थिति में सुधार आया है। वह शिक्षित हो रही है, अभी आर्थिक रूप से मजबूत हो रही है। घर से बाहर निकल रही है और पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिला कर चल रही है। अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित कर रही है–– **और इसका मुझे गर्व है।** आज नारी ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है, जल, थल, नभ सभी ओर नारी का वर्चस्व दिखाई देता है और अब नारी ने पुरुष के समान अपना स्थान बना लिया है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या वास्तव में नारी ने अपना अस्तित्व बनाया है इसका सीधा सा उत्तर तो ग्रामीण परिवेशों में है कि वह मनवाचित सभी अधिकार रखती है, किन्तु संवैधानिक रुप में। व्यवहारिक रुप में आज की नारी को पुरुषों पर आश्रित रहना पडता है। नित्य बसों, रेलों में उस आंतकित किया जाता है। पार्श्विक व्यवहार करने वाले पति से तलाक लेने पर उसको हेय दृष्टि से देखा जाता है।

निष्कर्षतः मैं यह कहना चाहूँगी कि नर और नारी समाज रुपी रथ के दो पहिए हैं। यदि एक शक्तिशाली और दूसरा कमजोर हो तो एक सशक्त समाज नहीं बन सकता। नियमों के बनाने से कभी भी समाज नहीं चलता, समाज चलता है नियमों को व्यवहारिक रुप देने से । अतः हमें चाहिए कि हम लडका–लडकी को एक समान समझें। जितना सम्मान और प्रतिष्ठा लड़के को दें उतना ही लड़की को भी दें तो कोई कारण नहीं कि हमारे समाज का रुप ही कुछ दूसरा होगा।

(अदिति अतुल पाल्हेरकर)
पुत्री श्री अतुल पाल्हेरकर
सहायक शाखा कार्यालय
सोनागिरी भोपाल

भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं मातृभाषा

वर्तमान में भारतीय शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजी भाषा को शैक्षणिक माध्यम के रुप में प्राथमिकता प्राप्त है। इसके कई गुण और दुर्गुण है। जहां मातृभाषा में पढ़ने से विद्यार्थियों को विषयों की बेहतर समझ आसानी से प्राप्त होती है वहीं वैश्वीकरण के इस युग में अंग्रेजी में निपुणता निश्चय ही एक बड़ा प्रतिस्पर्धात्मक लाभ है।

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि विश्व के सबसे प्रगतिशील देशों उदाहरण के लिए जापान, रूस, जर्मनी, चीन आदि में नागरिकों की शिक्षा उनकी मातृभाषा में ही दी जाती है। उन्हें अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व है। इससे वहां के नागरिक न केवल तकनीकी, चिकित्सा, व्यापार आदि क्षेत्रों में हम से आगे है वे मनोवैज्ञानिक तौर पर भी स्वयं को किसी विदेशी शक्ति से कम नहीं मानते। वहीं बडे खेद की बात है कि आज भी अधिकांश भारतीय आंग्ल साम्राज्य की गुलामी की मानसिकता से मुक्त नहीं हो पाए। यह कटु सत्य है कि हमारे देश के अधिकांश विश्वविद्यालयों में विशेषकर, अभियांत्रिकी एवं चिकित्सकीय संस्थानों में शिक्षा का माध्यम केवल अंग्रेजी है। इस विषय में भारत सरकार का हिंन्दी माध्यम में शिक्षा देने वाले इंजीनियरिंग कालेजों की स्थापना करने का निश्चय सराहनीय है। जहां अपने मातृभाषा से प्रेम करने में कुछ गलत नहीं है, वहीं अपनी भाषा पर अत्यधिक गर्व और उसमें पढ़ने–लिखने में आसानी, अंग्रेजी भाषा न सीखने का बहाना नहीं हो सकती। विद्वानों का मानना है कि हर भाषा आनी चाहिए। उदाहरण के लिए हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव को कुल 38 भाषाओं में निपुणता प्राप्त थी। वैश्वीकरण के इस युग का पूरा लाभ उठाने के लिए, अंग्रेजी भाषा का ज्ञान भी आवश्यक है। गांधीजी का सपना था कि भारतीय छात्र अमरीका, यूरोप आदि विकसित देशों में शिक्षा प्राप्त करें एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर–भारत का नाम रोशन करें। लेकिन यह बात हम सबको याद रखना चाहिए कि अपनी अंग्रेजी बोली पर गुरूर करना एवं स्थानीय भाषा को निकृष्ट समझना केवल व्यक्ति के अहंकार और अज्ञानता का परिचय देता है। अतः जहां प्राथमिक शिक्षा विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में ही देनी चाहिए, वहीं माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा के स्तर पर उन्हें अंग्रेजी भाषा भी एक विषय के रूप में पढ़ाना चाहिए, ताकि वे पश्चिम और पूर्व के समस्त गुणों को आत्मसात कर न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हों।

(नितिन विक्रमन)
शाखा कार्यालय
शाखा प्रबंधक
सोनागिरी

नोवल कोरोना वायरस

कोरोना वायरस जो प्राय चमगादड़ में पाया जाता है का नया वर्धित रूप कोविड 19 है, जो पहली बार मनुष्यों को प्रभावित कर रहा है इसलिए इसे नोवल शब्द का इस्तेमाल कर तथा वर्ष 2019 में फैलने की शुरूआत के कारण नोवल कोरोना वायरस – 19 का नाम दिया गया है। यह वायरस मनुष्यों में ए.सी. ई. रेसेप्टर जो नाक एवं मुंह में मुख्यतः पाए जाते हैं और कोशिकाओं के टी.एम.आर.एस. गेप के कारण मनुष्यों की कोशिकाओं में प्रवेश करता है। यह वायरस 02 से 05 दिन मनुष्य के शरीर में संवर्धन करता है तथा इस कारण से 02 दिन से 05 पांचवें दिन के मध्य प्रथम बार लक्षण आते हैं जिस दिन लक्षण आते हैं इस दिन को दिन–1 कहा जाता है। यह चिकित्सकों को इलाज निर्धारण करने हेतु जानना आवश्यक होता है। वायरस के विरुद्ध शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कार्य करती है, यदि शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी है, व्यक्ति कोमोर्बिटिड नहीं है और शरीर में जिंक एवं विटामिन सी की मात्रा अच्छी है तो दिन–1 एवं दिन–2 में हल्के लक्षण जिससे हल्का बुखार भी सम्मिलित है ठीक हो जाता है। कोई लक्षण न होने वाले मरीजों को असिम्पटोमेटिक कहा जाता है। असिम्पटोमेटिक संक्रमित व्यक्ति अन्य लोगों में ज्यादा रोग फैलाते हैं क्योंकि उनको खुद पता नहीं होता है कि वे रोग से पीड़ित हैं।

यदि दिन–1 एवं 2 तथा अन्य आगे के दिनों में तेज बुखार आता है तो यह निश्चित है कि वायरस ने शरीर में आग लगाई है, इन्फेक्शन किया है तथा फेफड़े में खून के थक्के जमा दिए हैं। यह प्रक्रिया दिन–06 तक चलती है तथा यदि शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता के कम होने के कारण, गलती से ज्यादा शुगर की मात्रा लेने के कारण वायरस रिप्लीकेट करता रहता है। जो अधिकतम दिन–10 तक करेगा तथा दिन–10 में वायरस विशेष विपरीत परिस्थितियां न हो तो शरीर से बाहर हो जाता है लेकिन वह जो आग लगा के जाता है उसको शांत करना एवं फेफड़े में खून के थक्कों का समय से निराकरण करना आवश्यक हो जाता है जो दिन–06 से आवश्यक रूप से शुरू हो जाना चाहिए तुरंत चिकित्सक से एटीक्वागुलेट तथा स्टेराइड देने हेतु परामर्श प्राप्त करना चाहिए। दूसरे परजीवी हमला न कर दें उसके लिए एंटीबायोटिक दवाओं की चिकित्सक सलाह देते हैं। यदि केवल बायों आँख लाल हो स्वाद एवं घ्राण शक्ति का विलोपन हो गया है और डायरिया हुआ है मान लीजिए ये बल्ले बल्ले कोविक है। विकित्सक से लक्षणों के अनुरूप दवाइयां लेकर ठीक किया जा सकता है। वायरस शरीर के सेल में घुसकर अपनी रोल को कन्फ्युजन पैदाकर अपनी फोटो कॉपी बनाता रहता है और इसको ग्लूकोज सहायता (रिप्लीकेट करने में) करता है। ग्लूकोज का सेवन, या इस दौरान एंटी. बायोटिक, इस्टेरॉइड दवाओं का इस्तेमाल वायरस को रिप्लीकेट करने में और मदद करेगा। इन्फेक्ट कोशिकाओं को बोनमैरो से बनने वाले टी सेल नष्ट करते हैं और फाइनली दिन 09 में नष्ट हो जाते हैं। लेकिन दिन–3 से दिन–10 के मध्य हुए इम्यून रिस्पोंस के कारण साइटोकाइन रिलीज होते हैं तथा साइटोकाइन का भूचाल जो एक प्रकार की प्रतिरक्षा प्रणाली का साइड इफेक्ट है साइटोकाइन रिस्पोंस के कारण अत्यधिक बुखार, इन्फ्लेमेशन और इन्फ्लेमेशन के कारण फेफड़े में खून के थक्के जमते हैं। जिससे बाद में समय से एंटीइन्फ्लामेट्री, एंटीक्वागुलेंट दवा, स्टेराइड तथा एंटीबायोटिक दवाओं द्वारा काय चिकित्सक, पल्मोलोजिस्ट उपचार करते हैं और यह आवश्यक हो जाता है दिन 06 में पर्याप्त उपचार शुरू हो जाए तथा फेफड़े का सी.टी. स्केन दिन 05 के पहले नहीं कराना चाहिए क्योंकि फेफड़े में नुकसान का पता 04 से 06 दिनों में ही लगाया जाता है और ज्यादा पहले सी.टी. स्केन कराना कोई मतलब का नहीं होता है। बल्कि नुकसानदायक होता है क्योंकि एक सी.टी. स्केन 80 से 300 एक्स रे के बराबर रेडियेशन देता है। बच्चों में कोविड कम प्रभावी होता है क्योंकि उनमें टी सेल उत्पादन के बोनमैरो के अलावा थाइमस ग्लैंड अतिरिक्त होती है जो 2 वर्ष के बाद विलुप्त होना शुरू हो जाती है। महिलाओं जिन्हें कोई क्रोनिक बीमारी, मोटापा न हो उन्हें कम लक्षण होते

हैं, क्योंकि ईश्वर ने महिलाओं को सुदृढ़ भानुमति का तंत्र दिया है। अध्ययन बताते हैं ज्यादा मात्रा में लिए गए प्रारंभिक अवस्था मे लिए गए स्टेराइड, ज्यादा मात्रा में अनावश्यक रूप से लिया गया एलीमेंटरी जिंक तथा अत्यधिक लिया गया एलीमेंटरी आयरन (फेरीटीन) अन्य फरफूँद जनित बीमारी माइकर म्यूकोसिस पैदा कर रहीं है, इसलिए उक्त दवाएं चिकित्सक की सलाह पर ही लेनी चाहिए।

कोविड–19 से बचाव के मूल मंत्र हैं। मास्क एवं सामाजिक दूरी बनाए रखना, मास्क सादा कपड़े का नहीं अपितु सर्जिकल 03 पर्त वाला मास्क होना चाहिए, भीड़ वाले इलाके में जाने पर, रोगी के पास, अस्पताल या किसी सार्वजनिक कार्यालय जाने में पर एन–95 आवश्यक रूप से अतिरिक्त पहनना चाहिए एवं सार्वजनिक स्थलों की वस्तुओं को हाथ न लगाएं यदि ऐसा करना पड़े तो तुरंत अल्कोहल सेनेटाईजर से सेनेटाइज करना चाहिए।

विशेष बीमारियां जैसे अनियंत्रित डायबिटीज, फेटीलिवर, दिल की बीमारियां या इम्यूनो सप्रेसेंट दवाइयां न ले रहे हों तो ऐसे व्यक्तियों को कोविड नुकसानदायक नहीं होगा। जिन्हें वैक्सीन लग चुकी हो तथा जिन्हें पहले कोविड हो चुका हो फिर भी मास्क एवं सामाजिक दूरी के नियम का पालन करना अनिवार्य है। जिन मरीजों को स्टेराइड दिए गए हैं उनके खून में ग्लूकोज की मात्रा अनियंत्रित हो जाती है तथा सामान्य व्यक्ति भी कोविड–19 संक्रमण के बाद अपने खून में ग्लूकोज की मात्रा को जरूर जांच करवाएं तथा नियंत्रित डाइट लें, यदि चिकित्सक उचित समझें तो दवा से नियंत्रित रखना होगा अन्यथा फफूंदी जन्य अन्य बीमारियों का खतरा रहता है पर्याप्त मात्रा में पानी लें, शरीर को किसी भी हाल में डिहाइड्रेट न होने दें और फेफड़े की श्वसन एक्सरसाइज जरूर करें जिसमें गुब्बारे फुलाव, शंख बजाना, योग क्रियायें सम्मिलित हैं। उपरोक्त उल्लेखित तथ्यों को अमल में लाकर इस विश्वव्यापी महामारी से पार पाया जा सकता है और पाया जा रहा है।

(के.सी.झा)
संयुक्त निदेशक/
उपनिदेशक (प्रभारी)

बख्शीश

(सत्य घटना पर आधारित)

बात उन दिनों की है जब मेरी पदस्थापना बतौर शाखा प्रबंधक उज्जैन में थी मेरे पास बीमा निरीक्षक का भी अतिरिक्त प्रभार था। अपने कक्ष में कार्यरत मेरी निगाह अचानक एक आगंतुक पर गई, उसने विधिवत प्रवेश का प्रोटाकाल पालन करते हुए अनुमति लेकर मेरे कक्ष में प्रवेश किया।

आचरण व्यवहार से ही वह अनुशासित सेना अथवा पुलिस का जवान लग रहा था। मेरे अनुमान के अनुरुप उसने अपना परिचय देते हुए बताया कि वह एक भूतर्पूव सैनिक है एवं सेवानिवृति उपरांत एक सुरक्षा ऐजेंसी का संचालन कर रहा है। अब चूंकि वह अपने कार्य क्षेत्र को आगे बड़े पैमाने पर करने का इच्छुक है। अतः उसे अपने संस्थान को कर्मचारी राज्य बीमा निगम में पंजीयन की बाध्यता है।

आगे चर्चा के दौरान ही उसने बताया कि कारगिल युद्व के दौरान सेना में उसकी पदस्थापना कारगिल में ही थी, आमने सामने की लडाई कें दौराने वह गम्भीर रुप से घायल हो गया था। महीनों सैनिक अस्पताल में इलाज के उपरांत जिंदगी तो बच गई किन्तु आंशिक अपंगता के चलते उसे सेना से सेवा निवृति लेनी पड़ी। कहते कहते उसने अपनी शर्ट ऊपर कर के अपने जख्म बताये तो मेरी रुह ही कांप गई, लगा कि किस मिट्टी के बने होते हैं ये वीर।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए उसने यह भी बताया कि उसे भारत सरकार सहित प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल महोदय ने भी सम्मानित किया मैं उसकी बातों में मंत्र–मुग्ध हो गया लगा कि हम जिस कार्य से जुड़े हैं उसमें गरीब मजदूरों के हितो के अलावा देश सेवा का तो अंश भी नहीं है मुझे उसकी गर्वगाथा पर गर्व महसूस हुआ।

अंततः मैने बिना विलंब किए उसके सारे दस्तावेजों का सत्यापन करते हुए अपनी सर्वे रिपोर्ट पंजीयन की अनुशंसा सहित क्षेत्रीय कार्यालय को भेज दी। क्षेत्रीय कार्यालय से भी उक्त पंजीयन पत्र कुछ ही दिनों में उसे प्राप्त हो गया। पाते ही वह खुशी खुशी पुनः मेरे कार्यालय आए और अपनी प्रसन्नता जाहिर करते हुए बोले कि विश्वास नहीं हो रहा, कि किसी शासकीय कार्यालय, में इतनी आसानी से बिना विलंब कार्य हो जाएगा। मैने इसे सहज लेते हुए कहा कि मेरे लिए यह रुटिन कार्य है। आपको देश भक्ति का मौका मिला था जो निसंदेह कठिन था, जिसकी बराबरी मैं सौ जन्म लेकर भी नही कर सकता हूँ।

जाते जाते पुनः आभार प्रदर्शित करते हुए वे एक रस्म अदायगी का प्रयास कर गए बोले "सर आपके काम की बख्शीश?"

उसके इस वाक्य ने मेरे सम्मान को सैकड़ो फीट गहरी खाई में गिरा दिया।

कुछ पल के लिए मैं निरुत्तर था ..... किन्तु फिर भी साहस कर जबाब दिया, आप ने तो कारगिल युद्ध जीत कर सम्मान की सारी बुलंदियों को जीता, किन्तु मुझे इतना गिराने का प्रयास क्यों?

आम आदमी की ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा भी तो देश भक्ति की पहली सीढी हो सकती है।

(एन के खरे)
सेवानिवृत शाखा प्रबंधक

अंतर्राष्ट्रीय खेलों में पदक की आस व भारत की खेल संस्कृति

वर्तमान परिवेश व जीवनशैली में आज मनुष्य अनेक रोगों से ग्रस्त हो रहा है, ऐसे समय में खेलों का महत्व स्वयमेव स्पष्ट हो जाता है। खेल न केवल हमें स्वस्थ रहने में योगदान देकर सक्षम बनाते हैं, अपितु वर्तमान युग की सकीर्णतावादी सोच से निकालकर हमें निष्पक्ष, सहिष्णु तथा विनम्र बनाकर एक बेहतर मानव संसाधन के रूप में ढालते हैं।

परम्परागत रूप से भारत के मध्यम वर्ग की धारणा रोजगारपरकता के लिहाज से खेलों के प्रति नकारात्मक रही है, इन्हें मनुष्य के बौद्धिक विकास व रोजगार प्राप्ति में बाधक मानते हुए कहा जाता था।

पढ़ोगे–लिखोगे तो होगे नवाब, खेलोगे–कूदोगे तो होगे खराब ऐसी मानसिकता के कारण ही ओलम्पिक जैसे आयोजनों में भारत के प्रदर्शन को लेकर अक्सर व्यंग्य से कहा जाता है कि सवा अरब के देश वाले तीन पदक लेकर लौट आते हैं।

इसे विडम्बना ही कहेंगे कि जनसंख्या की दृष्टि से हम विश्व में दूसरे पायदान पर हैं, किन्तु खेलों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारा प्रदर्शन संतोषजनक नहीं है। हर स्तर पर **खेल संस्कृति** के अभाव ने हमें क्षति पहुँचाई है।

ऐसे में यह प्रश्न उठता है, कि क्या समाज और संचार तकनीक से लैस देश का युवा वर्ग इस संस्कृति को अंगीकार करने के लिए तैयार नहीं है?

भारत में खेल संस्कृति का अभाव

एक क्षण को यह मान भी लिया जाए कि निर्धनता के मकड़जाल में फँसे एक–तिहाई जनसंख्या वाले भारतीय समाज के पास संसाधन और जागरूकता का अभाव है, तो शासकीय नीति व नियंताओं ने खेल–संस्कृति के विकास के लिए कितने ईमानदार प्रयास किए हैं?

वैश्विक महाशक्ति बनने का दम भरने वाले सार्वजनिक और कॉरपोरेट तंत्र को यह समझने में कितना समय लगेगा कि खेलों का विकास, अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी में सभ्यता के आधुनिक होने का प्रमुख मानक है। भारत यदि वैश्विक स्तर पर खेलों में कोई प्रभावी पहचान नहीं बना पाया है, तो इसके पीछे की मुख्य वजह यही है, कि भारत में खेल संस्कृति का अभाव है।

भारत में खेल संस्कृति के विकास में बाधक

भारत में खेल संस्कृति के न पनप पाने के कई कारण हैं खेल समितियों व प्रतिष्ठानों में जहाँ जमकर भ्रष्टाचार है, वहीं भाई–भतीजावाद व क्षेत्रवाद से भी ये अछूते नहीं हैं। भेदभाव के पक्षपात के आरोप भी इन पर लगते रहे हैं। नतीजतन प्रतिभाएँ तो हाशिए पर चली जाती हैं और मौका उन्हें मिलता है जिनके पास ऊँचे रसूख होते हैं। इसका प्रभाव प्रदर्शन पर पड़ना स्वाभाविक है। जब तक खेल समितियों व संस्थानों में पारदर्शिता नहीं होगी, खेल संस्कृति दम तोड़ती रहेगी। भारत में खेल जगत से जुड़ा समूचा परिदृश्य निराशा के स्याह बादलों से आच्छादित है। पुरस्कार वितरण में होने वाले विवादों के बवंडर में खिलाडियों की मेहनत और प्रतिभा को उचित सम्मान नहीं मिल पा रहा है।

खेल संघों के गैर–व्यावसायिक रवैये से आधारभूत ढांचे का विकास नहीं हो रहा है। यह विकास हो भी तो कैसे? जिन खेल संघों, समितियों व संस्थानों की बागडोर तपे हुए खिलाडियों के हाथों में सौंपी जानी चाहिए। यही कारण है कि ओलम्पिक जैसी अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में हम एक स्वर्ण पदक के लिए तरस कर रह जाते हैं। खेलों के प्रति न तो हमारी दृष्टि व्यावहारिक है और न ही प्रयास। खेलों से जुड़ी डोपिंग जैसी बुराई ने हमारी छवि को खराब किया है। ये सारी बातें खेल संस्कृति के अभाव का ही हिस्सा हैं।

अतः अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि भारत में खेलों के प्रति रूझान व प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की कमी नहीं है, कमी है तो उनकी प्रतिभा को सही मार्ग दर्शन, पर्याप्त संसाधनों व परंपरागत खेल संस्कृति की।

(विक्रम सिंह राजपूत)
सहायक / खजांची,
शाखा कार्यालय, क.रा.बी. निगम,
न्यू सुभाष नगर, भोपाल

काश! सफर आसान होता!

काश!
सफर आसान होता
सफर आसा होता
न वक्त की पाबन्दी होती
न काँटो के चुभ जाने का डर होता
न पत्थर से उबटन लगती
न गर्मी से तन झुलसता होता
न राहें इतनी पेचीदा होती
न उस पर इतने राही होते
न दूसरों की उम्मीदों का बोझा होता
न किसी को प्रतिउत्तर देना होता
न धैर्य की परीक्षा होती
न परीक्षा का पैमाना होता
काश।

सफलता का बाजार भी सस्ता होता।
या पहुँचने का कोई शार्ट रास्ता होता
पर यदि सफर आसां होता
तो न सफलता की दुकानों पर भीड़ होती
न ही उसका मूल्य होता
न गर्मी से तन झुलसता होता।
न राहें इतनी पेचीदा होतीं
न उस पर इतने राही होते
न दूसरों की उम्मीदों का बोझा होता
न किसी को प्रतिउत्तर देना होता।
न धैर्य की परीक्षा होती
न परीक्षा का पैमाना होता।
यदि कठिनाइयां न झेली होती
तो सहूलियत में न हर्ष होता।
यदि गर्मी की तपन न होती
तो मंजिल की ठंडक का एहसास न होता
यदि किसी का बोझा न होता
तो उनका सहारा भी न होता
न सफलता पर मान मिलता
न ही अलग पहचान मिलती।
यदि न मिलते पत्थर राहो पर
तो संभलना भी न सीखा होता।
यदि न चुभते काँटे राहों में तो
सफलता का थिएटर भी हॉउसफुल होता।
निष्कंटक न थी ये राहे न होगी
यूँ ही नहीं मिल जाती मंजिल
जो सफल हुए है।
सब, हौसला, रूह
औकात लिए है

(अंकित गुप्ता)
कार्यालय अधीक्षक

हे प्रकृति! हम शर्मिंदा हैं।

हे वृक्ष! हे धरती! हे सरिता!
हम शर्मिंदा हैं

सरसों की स्वर्णिम आभा
से रोशन बचपन होना था।
लहलहाते हुए खेत खलिहान में
क्रीड़ा करके बढ़ना था।
गांव की सौंधी खुशबू का मोल
शहर के प्रदूषण से न करना था।
चंपा गुलाब चमेली गेंदा;
का विकल्प इत्र न होना था।

हे प्रकृति! तेरी हर कृति उम्दा है।
उसे न्यून देखने वाली मानवता
बहुत शर्मिंदा है.

खाट पर पसरे हुए, आकाश तले
आँखों से तारे छूना।
टकटक करते इन तारो संग
प्रकृति की गोद में सोना।
ठंडी ठंडी हवाओं के थपेड़े खाना
सुबह सुबह कोयल के मधुरगान से
उठ जाना,
गाँव में तुलसी है,
बाग है, खेत है, वृंदा है
उनको न्यून देखने वाली
मानवता शर्मिंदा है।

(अंकित गुप्ता)
कार्यालय अधीक्षक

नारी जीवन

परिस्तिथियों से मोल भाव,
ये मेरे वश की नहीं हैं।
सजावट देखकर करना हिसाब,
ये मेरे वश की नहीं हैं।
जिंदगी के हालातों से लड़ता,
एक आस का हथियार लेकर वो,
यूँ छोड़कर उसे आ जाऊं जनाब,
ये मेरे वश का नहीं हैं
पेट की आग मे जल गए,
ख्वाईशों के पर उसके,
अनदेखा करके सजाऊं अपने ख्वाब,
ये मेरे वश का नहीं हैं।
सोच ये क्यूं हुआ मजबूर,
यूँ बचपन बेचने पर अपना,
ये समझने को तुम ही निकालो किताब,
ये मेरे वश की नहीं हैं।

(अमित ओझा)
नि० श्रे० लि०

सफर में धूप तो होगी ही

सफर में धूप तो होगी ही चल सको तो चलो।
सभी हैं भीड़ में, तुम भी निकल सको तो चलो ।
इधर–उधर कई मंज़िल हैं, चल सको तो चलो ।
बने बनाए हैं साँचे जो ढल सको तो चलो ।
किसी के वास्ते राहें कहाँ बदलती।
तुम अपने आप को खुद बदल सको तो चलो।
यहाँ किसी को कोई रास्ता नहीं देता
मुझे गिराके अगर तुम संभल सको तो चलो।
हर एक सफर को है महफूस रास्तों की तलाश
हिफाज़तों की रिवायत बदल सको तो चलो।
कहीं नहीं कोई सूरज, धुआँ – धुआँ है फिज़ा
खुद अपने आप से बाहर निकल सको तो चलो

(सन्नी शेवानी)
(उच्च श्रेणी लिपिक)
वसूली शाखा

बेटी

राह देखता तेरी बेटी, जल्दी से तू आना,
किलकारी से घर भर देना, सदा ही तू मुस्काना ।
ना चाहूं मैं धन और वैभव, बस चाहूं मैं तुझको
तू ही लक्ष्मी, तू ही शारदा मिल जाएगी मुझको
सारी दुनिया है एक गुलशन, तू इसको महकाना
किलकारी से घर भर देना सदा ही तू मुस्काना,
बन कर रहना तू गुड़िया सी, थोड़ा सा इठलना,
ठुमक ठुमक कर चलना घर में पैंजिनिया खनकाना ।
चेहरा देख के तू शीशे में, कभी कभी शरमाना
किलकारी से घर भर देना, सदा ही तू मुस्काना
उंगली पकड़ कर चलना मेरी, कांध पर चढ़ जाना
आंचल में छुप जाना मां के उसका दिल बहलाना ।
जनम–जनम से रही ये इच्छा, बेटी तुझको पाना ।।

(विवेक कुमार नामदेव)
उच्च श्रेणी लिपिक,
प्रशासन शाखा

अजन्मा

आरंभ हुआ जब ये जीवन
जिस क्षण में अजन्मा न रहा ।
जिस क्षण मुझको नाम मिला
नाम मिला एक जाति मिली
एक धर्म मिला एक पंथ मिला
पहचान मिलीं सीमाएं खिंची
बस वही आखिरी क्षण था ।
मेरे अनंत का, स्वतंत्रता का
आरंभ हुआ जब ये जीवन
जिस क्षण मैं अजन्मा न रहा।

(प्रवीण दुबे)
सहायक

!! करें खुद पर विश्वास !!

"छोटा सा दीपक घने से घने अंधेरे को दूर कर देता है"।
"छोटा सा अंकुश बड़े से बड़े हाथी को काबू में कर देता है"।
"छोटा सा हथौड़ा बड़ी से बड़ी चट्टान को तोड़ देता है"।
"थोड़ी सी योग्यता बड़ी से बड़ी मुश्किल को दूर कर देती है"।

जरा सी मेहनत के बदले एक खुशहाल जिंदगी का सौदा बुरा नहीं जब मनुष्य के हदय मे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की सच्ची लगन हो, अपने सिद्धांतो के प्रति उसमें पूर्ण आस्था हो, जो कठिनाईयो के शूलो को फूलों से भी कोमल समझता हो, तथा जिसमें दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो कोई कारण नहीं कि वो अपना लक्ष्य प्राप्त न कर सके। सफलता और असफलता दरसल एक ही सिक्के के दो पहलू है। मामूली सी चूक सफलता को असफलता में तब्दील कर सकती हैं। असफलता एक वेदना की तरह हैं जो मन को कुंठा से भर देती है। इसके विपरीत सफलता एक सुखद अनुभूति है, इससे मन में स्फूर्ति आती है। परंतु कभी कभी जिंदगी में ऐसे मौके आते हैं जब निराशा आशा से बड़ी लगती है, असफलता सफलता पर भारी पड़ने लगती हैं, परंतु इसका मतलब यह नहीं होता कि हम अपनी योग्यता पर विश्वास ना करे।

"सूरज को भी कई बार बड़े घने बादल ढक लेते है क्या सूरज अपनी तपिश छोड़ता है। चन्द्रमा भी घट कर पुनः अपना स्वरूप प्राप्त कर लेता है उसी प्रकार हमें भी असफलता या गलतियों से निराश नहीं होना चाहिए"। नेपोलियन अक्सर कहा करता या कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए अपनी समस्त शक्तियों का प्रयोग सफलता को अवश्यंभावी बनाता है और यह भी सत्य है कि बिना लक्ष्य के सफलता प्राप्त नहीं होती अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कीजिये उसके लिए योजना बनाएं तथा प्रसन्नता, उत्साह एवं आत्मबल से आगे बढ़िये।

आप यह कभी मत सोचिए कि मैं भला क्या कर सकता हूँ ? अपितु यह निश्चित कीजिये कि मैं क्या नहीं कर सकता। यदि संसार के महापुरुषों में यह हीन भावना रही होती तो जन्मांध सूरदास महाकवि न हो सके होते, अंधकार में डूबे हुए तुलसी कभी उच्च कोटि के साहित्यकार नही बन पाते, निरक्ष कालिदास कभी भी उद्‌भव साहित्य के प्रणेता न बन पाते।

लक्ष्य न ओझल होने पाये, कदम मिला के चल।
सफलता तेरे कदम चूमेगी आज नहीं तो कल।।

(हर्षा भासले)
नर्सिंग अधिकारी
डी.सी.बी.ओ.

बेटियाँ

कुचल दी गई आज फिर एक नन्ही जान,
क्या इसी लिए बनाया था इन्सान।
क्यों नहीं सुनाई दे रही उसकी पुकार
जो पल–पल बोल रही हैं
कर दे उध्दार कर दे उध्दार।

क्यों यह समाज बना निर्दयी,
मार दी गई बेटियाँ कई।
बन्द दरवाजों में कहीं रो ही हैं,
माँ की ममता कहीं खो गई है।

दिया होता अगर बेटियों को जीवन दान,
तो कर देती बेटियाँ तुम्हारा कल्याण।
आखिर बेटियों ने क्या बिगाड़ा है,
मरते दम तक सबको सम्भाला है।

बेटों ने तो छोड़ दिया था हाथ,
पर बेटियाँ रही हमेशा साथ।
बेटों ने दिखाए थे अनेक सपने,
पर परिवार वालों को कभी न समझा अपने।

अब तो ईश्वर से बस एक ही दुआ है,
कर दो ठीक जो समाज में हुआ है।
दे दो बेटियों को उनका अधिकार
मरते दम तक नहीं भूलेंगी ये उपकार।

(अनीता शर्मा)
शाखा प्रबंधक
डीसीबीओ बीना

संघर्ष

यूं झूठ –मूठ का मुस्काना,

अपनों का हमको ठुकराना।

उन टेढी–मेढी राहों पर,

गिरना फिर उठ कर उड़ जाना।

हमको हर पल खुद को खोना।

और खोकर पाना ही जँचता है।

गिरना भी अच्छा लगता है उठना भी अच्छा लगता है।

समाज की निगाहों मे जलना भी अच्छा लगता है

मंजिल को छूने जाता हूँ लड़ना भी अच्छा लगता है।

जिदगी में मिली ठोकरों पर, संभलना भी अच्छा लगता है।

बदलते वक्त में ,अपनो का बदलना भी अच्छा लगता है

हर पथ पगडंडी पर, कांटे है राहों पर।

राहों पर पडे कांटो पर, चलना भी अच्छा लगता है।

गिरना भी अच्छा लगता है उठ़ना भी अच्छा लगता है।

(चंद्रभान सिंह गौड़)
उच्च श्रेणी लिपिक
जबलपुर(म.प्र.)

बिटियाँ

चिड़िया की चहक बिटिया की महक
घर को गुलशन कर देती है
हो लाख थकन या कोई घुटन
प्रमुदित तन–मन कर देती है
हो चहक सदा, हो महक सदा
बस इसकी शपथ उठाएंगें
आओ सोचे संकल्प करें।
हम मिलकर इन्हें बचाएंगे।
बेटी अभिशाप नही वरदान है
बेटी सृष्टी का मूल आघार है।
बेटी संस्कति की संवाहक है।
बेटी सभ्यता की पालनहार है।
बेटी ईश्वर की अनुकम्पा है।
बेटी एक अनमोल धरोहर है।
बेटी भविष्य की जन्मदात्री है।

धरती के अनमोल रतन

धरती के अनमोल रतन
हरियाली से रहती है।
पौधै–पेड लगाओ जग में
इससे खुशहाली रहती है।
कोयल बोले पेड. के ऊपर
सबका मन हरसाती है।
पिहू–पिहू पपीहे की बोली
मन को खूब लूभाती है।
मत काटो तूम पेड. कभी भी
ये भी जीवन दाता है।
पशु पक्षियों को भी हरदम
अपनी ओर लुभता है।
पेड. लगाओगे धरती पर
तुम भी कुछ फल पाओगे।
रंग–बिरंगी इस दुनिया का
जीवन और बढ़ाओगे।

(सत्यवीर सिहं)
शाखा प्रबंधक
सतना, म.प्र.

इस बरस

बहुत कुछ देखना है अभी इस बरस में,
बहुत सी उम्मीदें अभी टूट जानी हैं,
बहुत से किस्से अभी खत्म होंगे
बहुत सी यादें अभी भीग जानी है

बहुत कुछ लिया है इस बरस ने हमसे
बहुत सी कहाँनियों का नाश हुआ है
अभी बहुत सी आशाओं का भी अंत होगा
अभी बहुत सी बातों का भी अंत होगा

बहुत से अधर्म किये हैं हमने
अभी बहुत से दंड भोगने होंगे
अभी अंधेरा टूटने में देर लगेगी
अभी हौसला हमें भुनाना होगा

बहुत कुछ सिखाया है इस बरस ने
इसे जिंदगी में अपनी लाना होगा
बहुत देर हो चली है अंधेरी रात में
सूरज को फिर से जगाना होगा
सूरज को फिर से जगाना होगा

(प्रिया विश्वकर्मा)
नि0क्षे0लि0
जबलपुर

प्रकृति का वरदान

सागर अगर हो गया मैला
मेघ जहर बरसाएंगे।
शीतल, सुखद, निर्मल
पवन कहां से लाएंगे।
नदियों को दूषित जल बहकर
जब सागर में आता है।
पहले से ही खारा सागर
और जहरीला हो जाता है।
कूड़ा करकट, धुआं, कार्बन,
जल को दूषित करते हैं।
आओ हम सब करें प्रतिज्ञा
सागर को सम्मान दें।
सब नदियों को स्वच्छ रखें
प्रकृति का वरदान ये।

(ज्योति कोल)
पुत्री श्री संतोष कोल
सतना

गाथा बीमा शाखा की

जब से मिली है बीमा फाईलों की सल्तनत
मुश्किल सी है बीमा वासियों की खैरियत।।
रिव्यू (Review) और आई.आर. (I.R.) की पेडेन्सी (Pendency)
पेडेन्सी खत्म करने की है टेडेंसी (Tendency)।।
लग गये है डी.18 (D-18) और सी.18 (C-18) के अंबार
एस.ओ. (S.O.) और एफ.ओ. (F.O.)
इश्यू होने बैठे है लगाकर कतार।।
सी.19 (C-19) की तकदीर
में है बरसों का इंतजार
सी.पी. 2 (CP2) का तो है
पंचवार्षिक योजना का विचार।।
सी.18 (C-18) और डी.18 (D-18)
के पी.एच. (व्यक्तिगत सुनवाई) ने
एक्शन फाइल्स (Action Files)
की उडा दी है दीवार,
एस.सी.एन. (S.C.N.) के कतार
कर रहे है विधि शाखा पर वार।।
फाईलो की दीवार उठ रही है चहूँ ओर,
डर है कहीं इसका हश्र न हो अनारक की तरह।।
जो या तो दीवारों में चुनवाएँ जाएगें,
या फिर देश निकाला कर दिए जाएगें।।
इल्तिजा है इस सल्तनत के शहंशाह से,
बीमा वासियों को ले लो अपने पनाह में।।

(सुवर्णा पानीकर)
सा0सु0आधि0
शा0का0 जबलपुर

अफसाना जमाने का

आज के जमाने में मुश्किल है ये पता लगाना जरा
कौन अन्दर से अच्छा है कौन है बुरा
मुँह पर तारीफों के पुल बाँधे खड़े हैं कई अफसाने
पीठ पीछे करते हैं बुराई और कहते हैं
खुद को सच्चाई के दीवानें
गिरगिट से भी तेज बदलता हैं इस दुनिया का रंग
मुश्किल हो जाता है जानना कौन हैं खिलाफ और
कौन हैं संग
उम्मीद क्या रखना फितरत है सबकी धोखेबाजी की
सामने से साथ और पीठ पीछे तैयारी हमारी बर्बादी की
जिन्हे दोस्त समझो वही दुश्मनी निभाते हैं
दिल की बात जिन्हे बताओ फायदा वही उठाते हैं
ऐसा चक्कर चलाते है भ्रष्ट हो जाती है हमारी अक्लें
इस दुनिया से बच के रहना यारों यहाँ बहुत सी हैं
बदलती शक्लें

(सुधा द्विवेदी)
नर्सिंग अधिकारी
डीसीबीओ, होशंगाबाद

जहाँ खामोश रहना है वहाँ मुँह खोल जाते है

कहाँ पर बोलना है और कहाँ बोल जाते है।
जहाँ खामोश रहना है वहाँ मुँह खोल जाते है

कटा जब शीश सैनिक का तो हम खामोश रहते है
कटा एक सीन पिक्चर का तो सारे बोल जाते है

नई नस्लों के ये बच्चे जमाने भर की सुनते है।
पर जब माँ बाप कुछ बोले तो बच्चे बोल जाते है

बहुत उँची दुकानों पर कटाते जेब सब अपनी
मगर मजदूर मांगेगा तो सिक्के बोल जाते है
अगर मखमल करे गलती तो कोई कुछ नहीं कहता।
फटी चादर की गलती हो तो सारे बोल जाते है

हवाओं की तबाही को सभी चुपचाप सहते है
चिरागों से हुई गलती तो सारे बोल जाते है।

बनाते फिरते है रिश्ते जमाने भर में अक्सर
मगर जब घर में हो जरुरत तो रिश्ते भूल जाते है

कहाँ पर बोलना है कहाँ पर बोल जाते है
जहाँ खामोश रहना है वहाँ मुँह खोल जाते है

(देवेन्द्र पंकज)
नर्सिंग अधिकारी
ईएसआईसी सिंगरौली

एसिक का गौरव

बीमितों के मन से जुड़ने लगे
व्यथा की भाषा पढ़ने लगे
कल तक जो फाइलों मे उलझे थे
आज हितलाभ से जुडने लगे
फिर इस बात पर क्यूँ न खुश होएं
कि हम बीमितों की सेवा करने लगे।

पंचदीपों के शौर्य की गाथा
बडी निराली है, जन्म से पंचतत्व
तक सुरक्षा देने वाली है, वक्त हो
या बेवक्त सभी में साथ निभाने
वाली है ई.एस.आई.सी. के हितलाभों
की योजनाएँ बडी ही प्यारी है

बीमित के हित की जब भी
बात आती है एसिक परिवार की
मेहनत इतिहास बनाती जाती है
बीमितों की व्यथा दूर कर, दुआ सभी
से पाती है, इसलिए ही तो ये
योजना भारत की नं01 कहलाती है

(वैभव दुबे)
सहायक –डीसीबीओ
होशगांबाद

यही संकट रहा तो

यही संकट रहा तो ज़िन्दगी के दुख कौन बांटेगा
अकेलेपन से लड़ते आदमी के दुख कौन बांटेगा

जहां पर दूरियां दिल में बहुत पहले से हो कायम
वहां पर पास रह कर आदमी के दुख कौन बांटेगा

अभी तो हैं हवाओं की नमी में वायरस जिन्दा
अभी तो गले मिल कर भाइयों के दुख कौन बांटेगा

यहां पर बंद सब कुछ काम हाथों में नहीं कोई
यहां भूखे और प्यासे आदमी के दुख कौन बांटेगा

अभी सब "अपने अपने अजनबी" से नजर आते हैं
अभी अपनाइय्यत के साथ सुख–दुख कौन बांटेगा

अकेला लड़ रहा है वायरस से वह अकेले में
कि इस तनहाई में बीमार का दुख कौन बांटेगा

के जिस दुनिया में होंगी वायरस की खेतियां उसमें
तड़प कर मरने वालों के भला दुख कौन बांटेगा

ये दुनिया क्या इसी दिन के लिए हमने बनाई है
न होगा आदमी तो आदमी के दुख कौन बांटेगा

(वैशाली शर्मा)
पुत्री अनीता शर्मा
शाखा प्रबंधक
डीसीबीओ बीना

बेटियाँ

प्यारी मासूम फूलों सी होती हैं बेटियाँ,
हर घर चहक उठता है इनसे, जिस घर में खिलखिलाती हैं बेटियाँ।
पैदा होती हैं जिस घर में, उस घर में रहमत लाती हैं बेटियाँ।
घर में भाई से हमेशा झगड़ती हैं बेटियाँ,
झगड़ती तो हैं पर, घर में भाई की लाडली होती हैं बेटियाँ।
नाजुक, नादान और चंचल सी,
पिता की लाड़ो, बिट्टो तो कभी बेटा होती हैं बेटियाँ।
पिता की जिंदगी के हर पड़ाव में,
कंधे से कंधा मिलाकर साथ देती हैं बेटियाँ।
पायल की छन–छन से चूड़ियों की खनखन तक,
पूरे घर में दौड़ती हैं बेटियाँ। छोटा सा आसमाँ लिए
सबके दिलों में राज करती हैं बेटियाँ।
बहुत दर्द होता है हमें, जब हमसे दूर जाती हैं बेटियाँ।
हर घर सुनसान होता है, हर पल याद आती हैं बेटियाँ।
घर में बेटों से सिर्फ एक परिवार बढ़ता है,
पर साथ में दो परिवारों को बढ़ाती हैं बेटियाँ।
और कोई नहीं ये तो ईश्वर कहता है,
जब मैं आनंदित होता हूँ, तब जन्म लेती हैं ये बेटियाँ।
ये ईश्वर द्वारा दिया गया वरदान है, कभी दुर्गा,
कभी सरस्वती तो कभी महाशक्ति होती हैं बेटियाँ।

(बलराम बारपात्रे)
सहायक, जबलपुर

॥ जिंदगी॥

जिंदगी को देखा है मैंने

पास से गुजरे हुए,

हर वक्त, हर लम्हे का एहसास दिलाती है,

हर रोज़ मुझे जीने का नया सलीका सिखाती है,

बहुत लोगो से मुलाकात हुई है,

कुछ खास हो गए, या कुछ से बस शुरू हुई है,

कई लम्हों में खुद को मैंने,

बदलते देखा है, निखरते देखा है,

बनते बिगडते या संभलते देखा है,

हर रोज बदल रही है जिंदगी,

वक्त के जैसे निकल रही है जिंदगी,

मैं खुश हूं या, सबको खुश रख रहा हूं,

मैं जिंदगी का एक नया स्वाद हर दिन चख रहा हूं!!!

(रमन सिंह रघुवंशी)
फार्मासिस्ट
डी. सी. बी. ओ. बीना

हे ईश्वर मैं थक चुका हूँ

हे ईश्वर मैं थक चुका हूँ
थमना चाहता हूँ इस दृष्टिभ्रम से निकलना चाहता हूँ
तेरी ही गोद में सर रख कर सोना चाहता हूँ,
समझता था जिसे जीवन का अर्थ
उस अर्थ से ही पलायन चाहता हूँ।
तुझे ढूंढा कहाँ कहाँ, कभी मंदिर कभी कैलाश,
हर अक्षु हर चक्षु तुझ ही में बसना चाहता हूँ,
जरा ठहरूँ कहाँ जाऊँ, जो पथ ले जाए
तुझ तक उसी पर चलना चाहता हूँ।

हाँ पता है मंदिरों मस्जिदों में जो दुआ है,
उन्हीं दुआओं उन्हीं अदाओं में तुझे निहारना चाहता हूं
ठहर कर भाग कर सिसक कर
हर पहर तुझसे ही संवारना चाहता हूं।

कुछ बेमोल पत्थरों में ढूंढा था मोल जीवन में,
उन्हीं बेमोल पत्थरों को पार कर तेरा इल्म चाहता हूं
झिलमिलाती ओस जब देखी पल्लव पर,
ऐसा ही प्रतिबिंब तेरा अपने ह्रदय में चाहता हूँ।

कलरव कर रहा था मैं पारावार के किनारों पर,
असंख्य टिमटिमाते जुगनुओं की टोलियाँ देखी,
उन्हीं जुगनुओं सा प्रज्ज्लित कर दे वो स्पर्श
चाहता हूँ।
जिस तरह सीप नें समेटा हुआ है मोती को,
उन्हीं मोती सा तेरे चरणों में सिमटना चाहता हूँ,
भटकना चाहता हूँ बहकना भी चाहता हूँ,
जो मिला सके मुझे तुझसे,
हर उस व्यथा से गुजरना चाहता हूँ।
क्षण भर हो या हो सहस्त्र वर्ष अवसान में,
है ईश्वर
वर सिर्फ तुझे
और तेरा ही साक्षात्का
मैं थक चुका हू

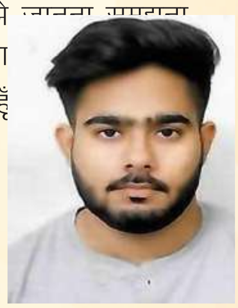

(सन्नी शेवानी)
उच्च श्रेणी लिपिक
वसूली शाखा

जिंदगी

ये अटपटी अनोखी सी जिंदगी
चन्द खुशियाँ पाने की होड़ जिंदगी
आकांक्षाओं का एक दौड़ जिंदगी
जरूरतों के बोझ तले दबी सी जिंदगी

आँखों मे ख्वाहिशें भरे
ओस सी चमकती जिंदगी
हर पल बदलते वक्त के रफतार सी जिंदगी
किसी मोड़ में खोयी लम्बी कतार सी जिंदगी

विश्वास के रिश्तों में पिरोइ सी जिंदगी
झूठे–सच्चे जज्बातों की कसौटी जिंदगी
जीत से उछलती खुश होकर चहकती जिंदगी
हार से थरथराकर गमों में सिमटी जिंदगी

पूर्ण होते ही पुरानी इच्छाएँ सी
नई अपेक्षाओं को जन्म देती ये जिंदगी
सुख–सुविधा की चाह में
जूझती ये जिंदगी
मात्र खुद को समय न दे पाती ये जिंदगी

(जुलेता एक्का)
सहायक
शा० का०, सतना

बचपन

कहाँ गए वो मीठे पल, बूढ़ा अब हो चला कमल ।

जब मेरे मुस्कान की आस, हर कोई लगाया करता था।

जब मेरे रो जाने पर घर, उथल पुथल सा हो जाता था।

कहा गई वो माँ की गोद, जहा लेटकर सोता था।

कहाँ गई वो रात की लोरी, बड़े चाव से सुनता था।

कहाँ गया वो मंहगा झूला और यारो की चहल पहल

कहाँ गए वो मीठे फल ।

बूढ़ा अब हो चला कमल

चालाकी थी न चिंता थी दुनिया में न कुछ मेरा था।

माँ बाप ही दुनिया मेरी थी छाया उनकी बस बसेरा था।

न धंधा था न व्यवसायं खेल खेलना बस आता था।

याद है वो लकड़ी की काठी, जिसके सहारे चलता था

कहाँ गया वो बचपन क्यों हुआ यह दुखद बदल ??

कहाँ गए वो मीठे पल बूढा अब हो चला कमल

(पुलकित जैन)
उच्च श्रेणी लिपिक
उप क्षेत्रीय कार्यालय
भोपाल

!! स्मृति शेष !!

वे मूक नजर के आमंत्रण,

पलकों का वह उत्थान पतन,

निःशब्द प्रेम की वो बातें,

वह प्यार का निश्छल पागलपन,

हर सुबह मधुर मुस्कान लिए,

हर शाम मिलन अरमान लिए,

तुम तनिक देर ना ठहर सके,

चल दिए यूं ही बिन खबर किए,

लेकिन तुम जा सकते कभी नहीं,

मेरे इस अंतर्मन से,

जिसका कारण है इक विशेष,

क्यूंकि सुमधुर है स्मृति शेष।

(श्रद्धा सुमन झारिया)
पत्नी देवेश झारिया

पृथ्वी बचाओ

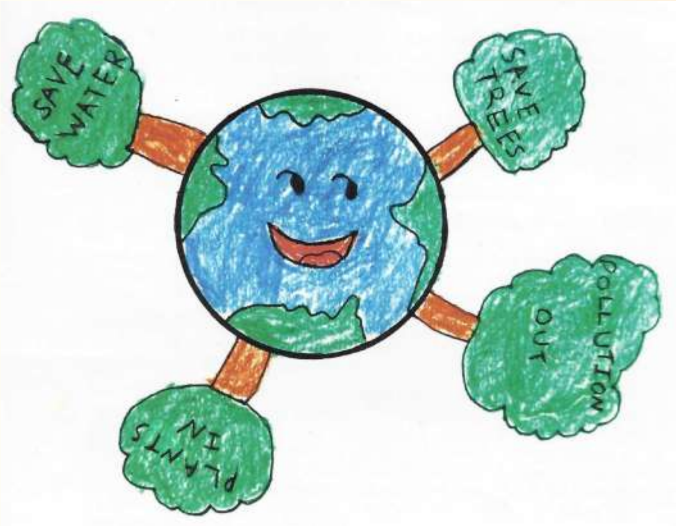

(श्रेष्ठ झारिया)
पुत्र श्री देवेश झारिया

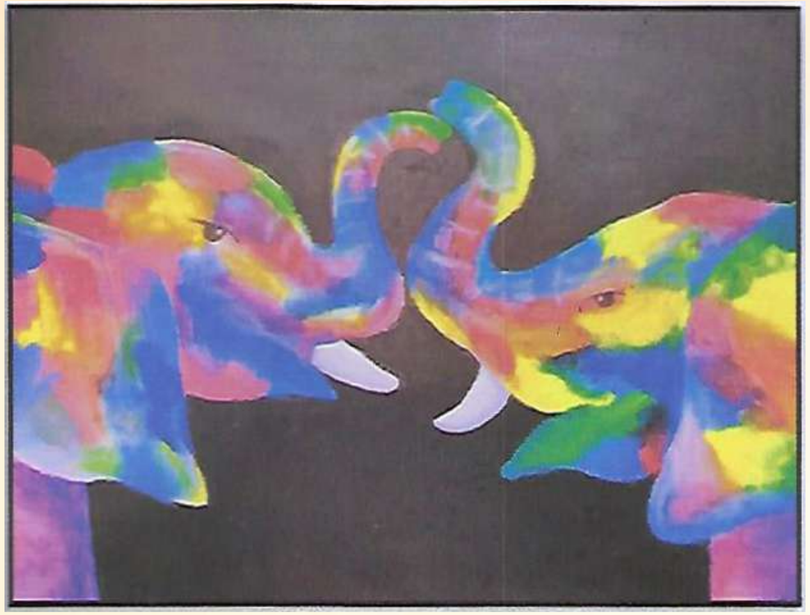

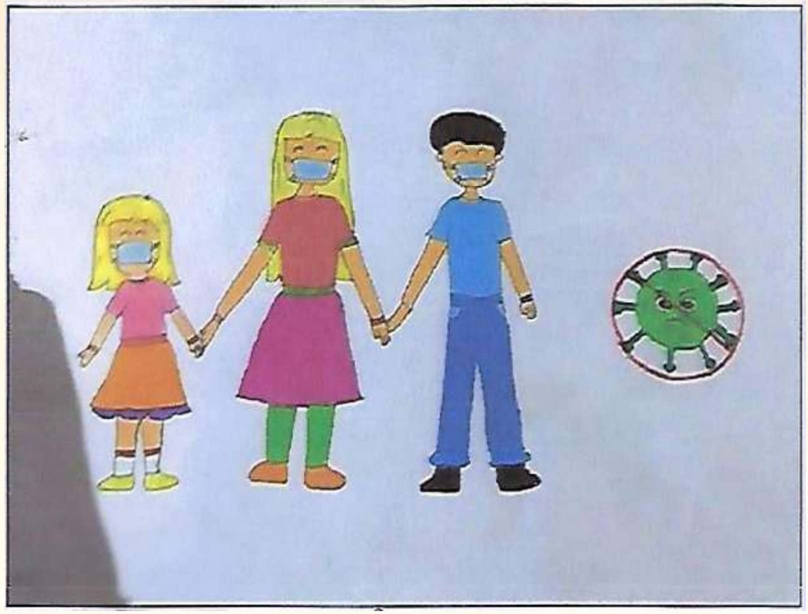

कु0 प्राची झा
पुत्री श्री के0 सी0 झा0

सुप्रभात
आकर्षा भटनागर
पुत्री : दीपक भटनागर
निजी सहायक

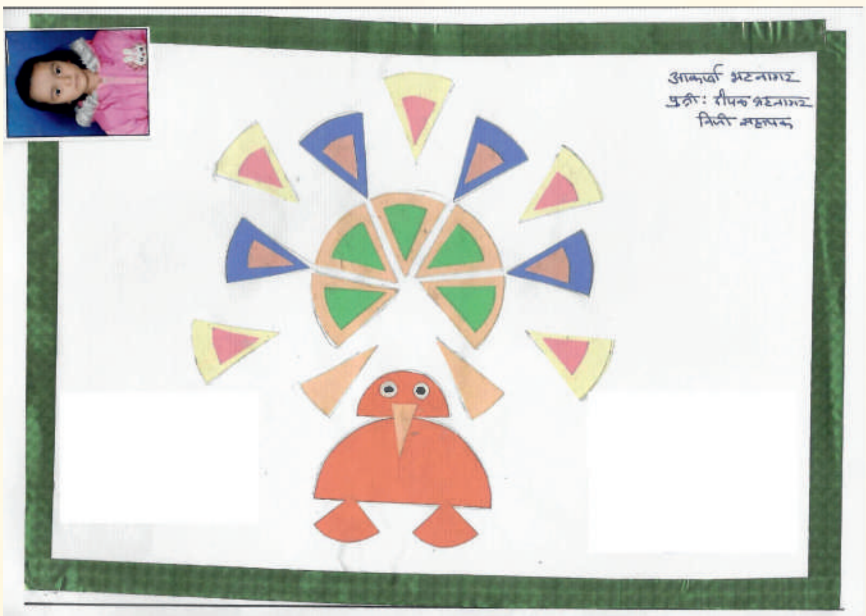
आकर्षा भटनागर
पुत्री : दीपक भटनागर
निजी सहायक

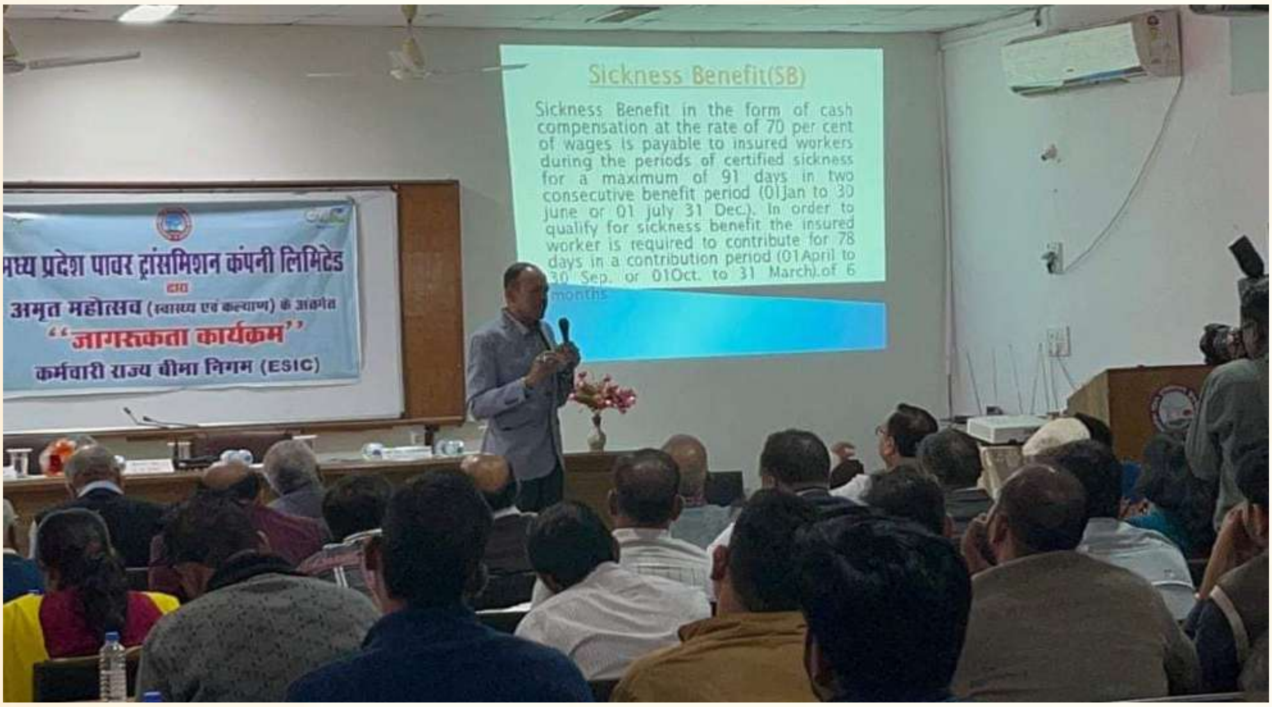

दैनिक भास्कर   भोपाल   10-03-2022

कर्मचारी राज्य बीमा निगम में आजादी का अमृत महोत्सव मना, हेल्थ चैकअप कैंप भी

भोपाल। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के उपक्षेत्रीय कार्यालय में 7 मार्च से लेकर 13 मार्च तक आइकोनिक सप्ताह मनाया जा रहा है। इसी कड़ी में 8 मार्च को आजादी का अमृत महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर कार्यालय परिसर में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस भी मनाया गया।

विशेष सेवा पखवाड़ा... कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने हितग्राहियों को बांटे प्रमाण-पत्र

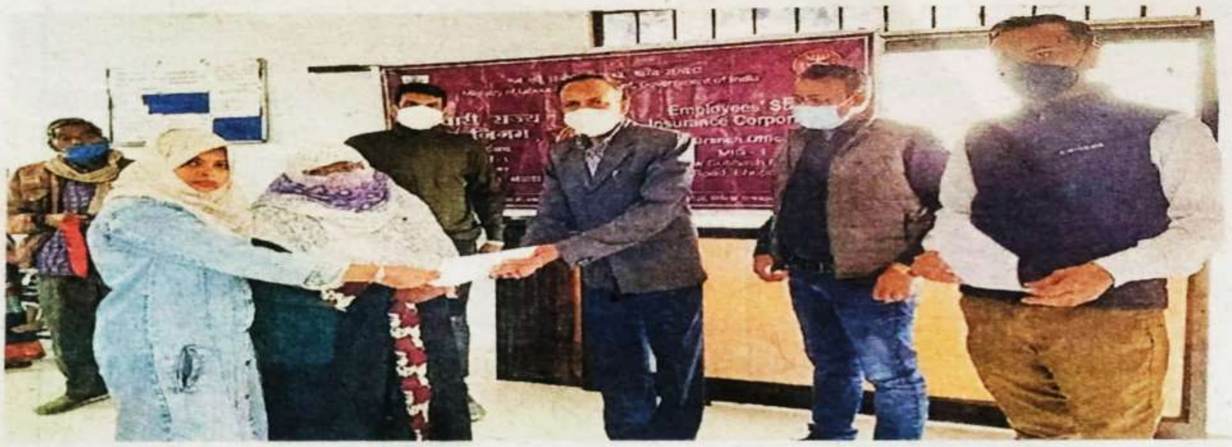

भोपाल | कर्मचारी राज्य बीमा निगम में 21 फरवरी से 7 मार्च तक विशेष सेवा पखवाड़ा और 7 से 13 मार्च तक आजादी के अमृत महोत्सव का आइकोनिक सप्ताह मनाया जा रहा है। इस मौके पर मृतक बीमितों के आश्रितों को केसी झा, संयुक्त निदेशक (प्रभारी) ने हित लाभ के स्वीकृति प्रमाण-पत्र सौंपे।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम औषधालय कार्यालय शुरू, कर्मचारियों को 12 योजनाओं के तहत मिलेगा लाभ

संयुक्त निदेशक एवं प्रभारी केसी झा ने कोठी बाजार में किया कार्यालय का शुभारंभ

जागरण होशंगाबाद। कोठी बाजार स्थित कर्मचारी राज्य बीमा निगम औषधालय कार्यालय का सोमवार को दोपहर 3 बजे संयुक्त निदेशक प्रभारी केसी झा व चिकित्सक निदेशक हरिशचंद्र यादव ने फीता काटकर कार्यालय का शुभारंभ किया। इस अवसर पर कर्मचारी राज्य बीमा निगम औषधालय के संयुक्त निदेशक केसी झा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि ईएसआई के दायरे में आने वाले पात्र हितग्राहियों को 12 योजनाओं के तहत मेडिकल की सुविधा का लाभ मिलेगा। श्री झा ने कहा कि पात्र हितग्राही शहर की किसी भी अस्पताल में जाकर छोटी से लेकर बड़ी बीमारी का इलाज करवा सकता हैं। लेकिन उसका ईएसआई से पंजीकृत होना जरुरी है। तभी उस हितग्राही को योजना के तहत लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि प्रायवेट सेक्टर में काम करने वाले हर वह कर्मचारी जो ईएसआई के दायरे में आते हैं। उन्हें इसका पूरा लाभ मिलेगा। इसमें स्कूल व अन्य संस्थान है जहां कर्मचारियों की संख्या दस से कम नहीं होना चाहिए। उस संस्थान के कर्मचारी आटोमेटिक ईएसआई के दायरे में आ जाएगें। लेकिन संस्थान के मालिक को सभी कर्मचारियों का तीन प्रतिशत की दर से ईएसआई कटता हो। वहीं कर्मचारी इसके दायरे में आएंगे।

चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में रहेंगे तैनात: उन्होंने कहा कि सड़क हादसे में कोई हितग्राही की हालत ज्यादा गंभीर नहीं है तो पहले उसे राज्य बीमा निगम औषधालय कार्यालय लेकर आए। औषधालय में मौजूद डॉक्टर घायल व्यक्ति को चैक करेगा। अगर उसकी हालत ज्यादा गंभीर है तो उसे यहां से रेफर किया जाएगा। इसके बाद संबंधित अस्पताल में ईएसआई के तहत हितग्राही का इलाज होगा। इसके अलावा स्थिति ज्यादा गंभीर होने पर औषधालय ना पहुंचकर सीधे अस्पताल ले जाते है। ऐसे में हितग्राही का ईएसआई का पंजीयन होना जरुरी हैं। इसके आलावा फर्माशिष्ट भी रहेगा तो कार्यालय से दवा बांटेगा।

हितग्राही की मौत के बाद परिवार को पेंशन मिलेगी

सड़क हादसे में ईएसआई पात्र हितग्राही की अगर उसकी मौत हो जाती है तो, उसे 70 प्रतिशत के मान से परिजनों को पेंशन दी जाएगी। जिससे उसके परिवार का भरण पोषण हो सके। यह केंद्र सरकार की योजना है। इसके तहत 12 प्रकार के लाभ हितग्राही को मिलेंगे। कोरोना काल में अगर किसी कर्मचारी की नौकरी छूट गयी है तो ईएसआई के तहत 90 प्रतिशत के मान से कर्मचारी को तीन महीने की सेलरी मिलेगी। कार्यालय के शुभारंभ अवसर पर सहायक निदेशक जितेंद्र कुमार, अधिवक्ता आरएस यादव सहित हितग्राही मौजूद रहे।

एन एफ एल
NFL
E. S. I. C
by

दैनिक नोबल एक्सप्रेस — पढ़ो सबसे बेहतर

राजधानी

भोपाल, शनिवार 25 फरवरी 2023 — 08

नोबल मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल द्वारा उप-क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी बीमा निगम, भोपाल के 71 वर्ष पूर्ण करने पर स्वास्थ्य परीक्षण कैंप का आयोजन

नोबल एक्सप्रेस ■ भोपाल

कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने अपनी सेवा के 71 वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में श्रमिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों के लिए दिनांक 24.02.2023 से 10.03.2023 तक विशेष सेवा पक्ष का आयोजन कर रहा है। जिसमें सेमिनार/जागरूकता कैम्प/स्वास्थ्य परीक्षण कैंप /सफाई अभियान/ शिकायत निवारण दिवस (सुविधा समागम) का आयोजन विभिन्न तिथियों पर किया जाता है। इसका अनुसरण करते हुए उप-क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी बीमा निगम, भोपाल ने नोबल मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के सहयोग से स्वास्थ्य परीक्षण कैंप का आयोजन किया। जिसमें डॉ. प्रिया सिंह, डॉ. नरेन्द्र सिंह, डॉ. ज्ञानेन्द्र तथा कर्मचारी बीमा निगम के चिकित्सक तथा कर्मचारी उपस्थित रहे। हितग्राहियों को सेमिनार के माध्यम से निगम के द्वारा दिये जाने वाले लाभ की जानकारी दी गई और चिकित्सकों द्वारा श्रमिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य परीक्षण कर दवाइयां भी वितरित की गईं। के.सी झा संयुक्त निदेशक ने बताया कि जिन संस्थानों में 10 या 10 से ज्यादा कर्मचारी होते हैं उन्हें निगम में बीमा करवाना जरूरी होता है। झा ने आगे कहा ऐसे स्वास्थ्य परीक्षण कार्यक्रम उप-क्षेत्रीय कार्यालय और शाखा कार्यालयों में साल भर में 8 से 10 बार आयोजित किये जाते हैं जिसमें श्रमिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों निशुल्क इलाज कर दवा वितरित की जाती है।

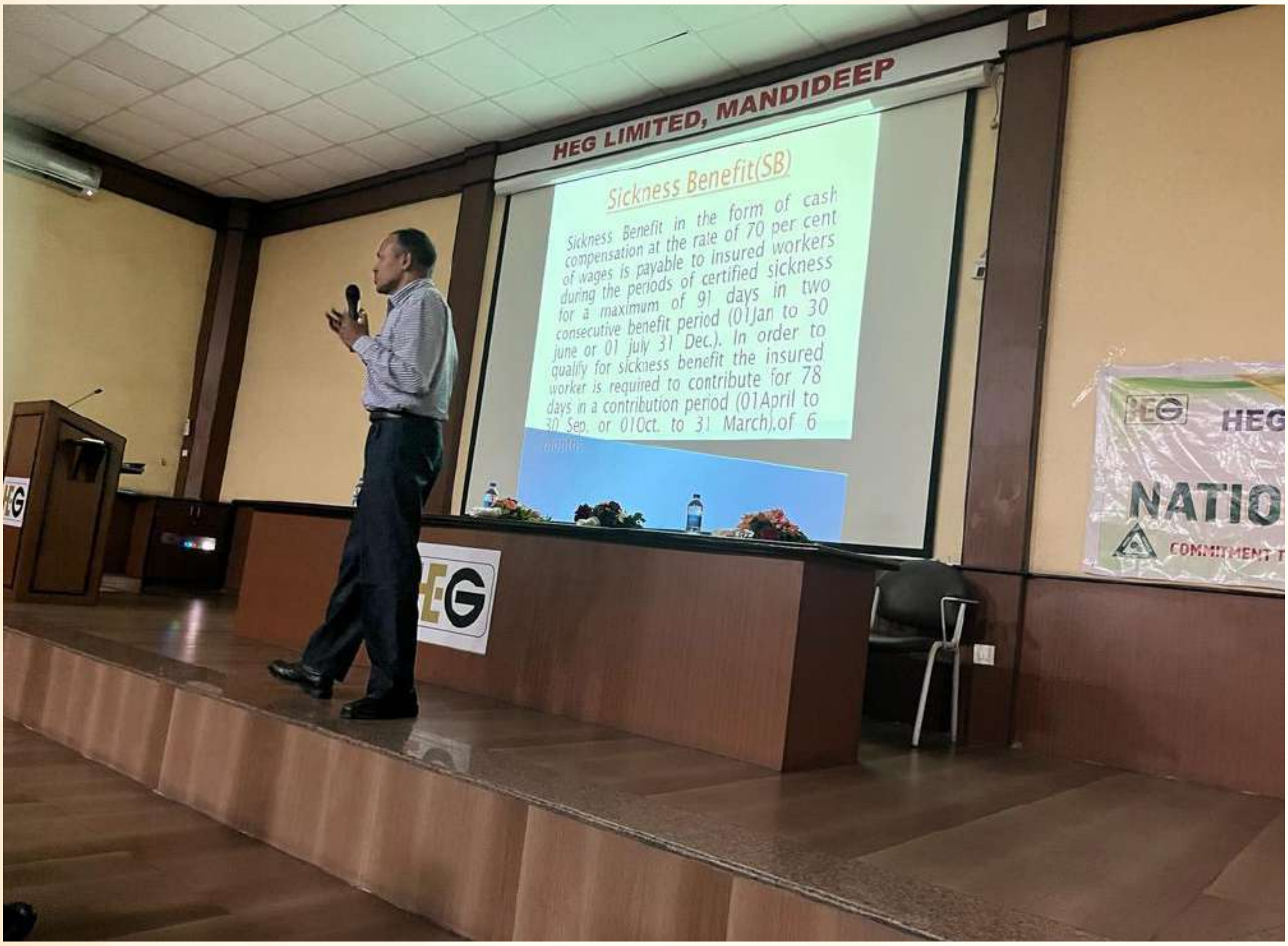
HEG LIMITED, MANDIDEEP
Sickness Benefit(SB)
Sickness Benefit in the form of cash compensation at the rate of 70 per cent of wages is payable to insured workers during the periods of certified sickness for a maximum of 91 days in two consecutive benefit period (01Jan to 30 june or 01 july 31 Dec.). In order to qualify for sickness benefit the insured worker is required to contribute for 78 days in a contribution period (01April to 30 Sep. or 01Oct. to 31 March).of 6
HEG
NATIO

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति क्र. 01